

PRINSEPS

NO RESERVE
NATIONALISM
BOOK AUCTION

20th-26th JAN 2020

MAHATMA
LIFE OF MOHANDAS KARAMCHAND GANDHI



FORMATION & GROWTH
OF

I. N. A.

HARIJAN SEVAK

1953 - 54

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७

सम्पादक : मगनभाजी प्रभुदास देसाजी

अंक

मुद्रक और प्रकाशक

जीवगजी डाह्याभाजी देसाजी

सर्वजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ७ मार्च १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ३

विदेशमें रु० ८; शि० १४

यह सच्चा सर्वोदय है*

१९०६ में कलकत्ता कांग्रेसमें दादाभाजी नौरोजीने स्वराज्य शब्दका उच्चारण किया था। तबसे स्वराज्यकी प्रत्यक्ष प्राप्तिमें ४० साल निकल गये। जिसके भी पहले कांग्रेस देशके अुत्थानका काम करती रही, पर स्वराज्य शब्द तब नहीं था। जिसलिये प्रयत्नको हम न गिनें तो भी ४० साल लगातार जिन्होंने स्वराज्यके लिये काम किया, अैसे भी लोग हो गये और आज कुछ विद्यमान हैं। गांधीजीने 'हिन्द स्वराज्य' लिखा। वह मेरे पालसे १९०७ या ८ में लिखा होगा। उसमें उन्होंने स्वराज्यकी नी कल्पना पेश की है और उसकी प्राप्तिके लिये मेरा जीवन समर्पित है अैसी प्रतिज्ञा उस किताबके अन्तमें की है। तबसे आखिर तक यानी करीब ४० साल तक उसके वास्ते सतत काम करते रहे और उनके साथ अन्य कुछ लोगोंने भी जीवन उसमें समर्पित कर दिया। राजकीय, सियासी आजादी मिल गयी। उसके बाद अब आर्थिक आजादीका सवाल मेरे सामने पेश है। और उसका आरंभ भूदान-यज्ञसे हो रहा है।

सब कोजी समझते हैं कि यह एक बुनियादी काम है और कि अहितक आर्थिक क्रान्ति इसमें निहित है। इस कामको १ साल होने आये। २ सालके आन्दोलनका नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तानभरमें, कम-से-कम जहाँतक शिक्षित वर्गका ताल्लुक है, यह बात पहुंच गयी और लोग उसका महत्त्व समझ गये। तो अब मेरे सामने सवाल है कि इस कामके लिये पूर्ण कार्यतासे लग जानेवाले कितने भाजी-बहन में प्राप्त कर सकता हूँ। विशंकर महाराजको गुजरातका तो बच्चा बच्चा जानता है, हिन्दुस्तानके कजी कार्यकर्ता भी जानते हैं। वह अभी चीन हो आये। उन्होंने ग्रामीण दृष्टि, स्वराज्यकी दृष्टि, अहिंसाकी दृष्टिसे चीनके स्थानको देखा। यहाँ आनेके बाद कहने लगे कि चीन तो अपनी राह चल रहा है। हिन्दुस्तानमें अगर कोजी अैसा काम चल रहा है तो वह भूदान-यज्ञका है। यों कहकर वे इस काममें लग गये हैं और गांव-गांव घूमते हैं। बबलभाजीने मुझे लिखा कि उन्होंने संकल्प कर लिया है कि १९५७ तक वह इस काममें लगे रहेंगे। यह छोटी बात नहीं है। मैंने ही १९५७ की बात लोगोंके सामने रखी थी। स्वराज्यकी प्राप्तिके बाद

अंधेरा छा जाता है। तो उसकी योजनानुसार जो बातें होती उसमें हमें दुःख नहीं होना चाहिये। बल्कि उसमें से मार्ग निकाल चाहिये। शिथिलताको मिटानेमें कुछ समय जरूर लगेगा। कि भी यदि स्वराज्य हमें हासिल हुआ है—राजकीय स्वराज्य, तो उस परिणाम कालगति बढ़नेमें दीख पड़ना चाहिये। आन्दोलनके दो सौ बीत चुके। पहला साल तो यह कल्पना लोगोंको समझानेमें गया और उसमें जिसकी कल्पना थी वह अकेला काम करता था। उसकी शिकायत नहीं है। बुद्ध भगवानने जब नया विचार पाया तो अकेले ही घूमते रहे। मुहम्मद पैगम्बरको जब दर्शन हुआ, आरंभमें बहुत थोड़े ही साथी थे।

जैसे नदी गिरिगुहामें पैदा होती है और अकान्तमें बहा करती है, वैसे ही महान विचारका जन्म किसी हृदय-गुहामें होता है और फिर वह विचार अकाकी विचरता है। जिस मनुष्यको वह विचार सूझा, वह तो निमित्तमात्र, वाहनमात्र होता है। वैसे ही मेरा हुआ। वैसे ५ साल कामके लिये पर्याप्त होने चाहिये अैसा मैं माना। कैसे होगा? मैंने सोचा कि बिहारमें भगवान बुद्धका नालेंकर इसके लिये हम मर मिटें। अब करीब ६ महीने पूरे हो आये। ४ लाखका पहले संकल्प था। अभी भी १५ दिन बाकी हैं। मालूम नहीं अितना पूरा होगा या नहीं। अब भी हो सकता है। लेकिन जो भी हो मुझे तो आगेकी स्फूर्ति मिल गयी जैसे आकाश बिलकुल साफ होता है और सूर्यका स्पष्ट दर्शन होता है, वैसे ही जिसका स्पष्ट दर्शन मुझे हुआ है। मैंने जाना कि हम लोगोंको जगा सकते हैं। कार्यकर्ताओंके वृत्ति-भेदोंको हम मिटा सकते हैं, जिसमें कोजी सन्देह नहीं। इसके वास्ते अधिक हृदय शुद्धि चाहिये। यह जो अकान्त मुझे मिला, परमेश्वरने यह बीमारी तो दान मुझे दिया, जिससे जो मौका मिला उसका उपयोग करके मैंने बहुत ही अन्तःपरीक्षण किया और अन्तःकरणकी जितनी गहराईमें मैं पहुंच सकता था अतनी गहराईमें पहुंचनेकी मैं कोशिश की है। काम तो बाहर करना है पर उसका अद्गम अन्त होता है। इस वास्ते अन्तःकरणकी गहराईमें मैं पहुंचा। जिस निरीक्षणके समय मैंने बहुत त्रुटियां, बहुत दोष अपनेमें पाये। अपने यानी अपने स्वरूपमें नहीं, बाहरी रूपमें मैंने जो चोला लिखा है उसमें। उसके निवारणके लिये मैं प्रयत्नशील हूँ। उसमें मु

PRINSEPS

NO RESERVE NATIONALISM BOOK AUCTION

20-26 JANUARY 2020

www.prinseps.com

Prinseps Note

We are excited to bring to you our first No Reserve Auction at Prinseps! We are having our first book auction of the year this Republic Day. This auction has a range of books authored by Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, Subhas Chandra Bose, Hugh Toye amongst well-known editors like Pyarelal, Amal Home and Bankim Chandra Sen. All of the lots on offer are related to important freedom fighters in Indian history.

Prinseps has an important newsletter written by Mahatma Gandhi. Named after the Harijan movement that he started, the weekly newsletter written in Hindi aimed at dismantling the concept of untouchability in India at the time. The Hindi edition of the Harijan was named Harijan Sevak. It was first published on the 23rd of February, 1933 and was the same size as the English edition.

This auction also boasts of 70 volumes of The Collected Works of Mahatma Gandhi. The series took roughly 40 years to be compiled and spans from 1884 to 1948 when Gandhi was assassinated. The collection includes Gandhi's writings, letters, essays, notes and interviews related to India's freedom struggle.

In addition to books, there are three prints published by Shyam Sunder Agrawal and a 1946 Subhas Chandra Bose Calendar by Shiri Talashilkar available. Posters made in the 1940s were often mass-produced and was an easy way to inform the public. They often were nationalistic in character and were used to unite the masses against the British colonizers.

Additionally, there are several books related to Subhas Chandra Bose and the Indian National Army. The Springing Tiger is a historical account and the opposition's view of the Indian National Army published by British Colonel Hugh Toye. The Indian Independence Movement in East Asia written by Kesar Singh Giani and The Formation and Growth of INA by Durlab Singh are authentic accounts of the Azad Hind Government led by Bose and the INA Trials at Red Fort.

Finally, we also have a few books written by Jawaharlal Nehru. Towards Freedom: The Autobiography of Jawaharlal Nehru and The Discovery of India was written when he was imprisoned. A Bunch of Old Letters is a compilation of correspondence to and from him. All of these books give an insight into Nehru's life before he became the Prime Minister of India.

Research, Sales and Curatorial Team at Prinseps

No Reserve Nationalism Book Auction

20-26 January 2020

Auction is open for proxy bidding

Auction commences for live bidding at **10 am**
on 20th January and ends as per schedule on 26th January at **7 pm**

Lot Numbers	Closing Time (India)	Closing Time (US Eastern)	Closing Time (US Pacific)	Closing Time (UK)	Closing Time (Japan)	Closing Time (Hong Kong)
1 - 14	7.00 PM	9.30 AM	6.30 AM	2.30 PM	10.30 PM	9.30 PM
15 - 28	7.30 PM	10.00 AM	7.00 AM	3.00 PM	11.00 PM	10.00 PM
29 - 38	8.00 PM	10.30 AM	7.30 AM	3.30 PM	11.30 PM	10.30 PM

NO RESERVE NATIONALISM BOOK AUCTION

20-26 JANUARY 2020



Copy right reserved by Publisher
SHYAM SUNDER LAL AGRAWAL
Picture Publisher
Chowk, Cawnpore.

JAI HIND

श्यामसुन्दरलाल अग्रवाल ।
चित्र प्रकाशक ।
चौक कानपुर ।

1.

Programme of Post – War Revolution

Netaji Subhas Chandra Bose

1946

8 x 5 in

ESTIMATE

INR 20,000 – 30,000

PROVENANCE

Private Collection

*Published by National Youth Publications, Bombay.
First edition, June 1946.
Issued by H V Kamath (Gen. Sec. All India Forward Bloc)*



2.

Verdict from Formosa:
Gallant end of Netaji Subhas Chandra Bose

Harin Shah

1956

9 x 5.5 in

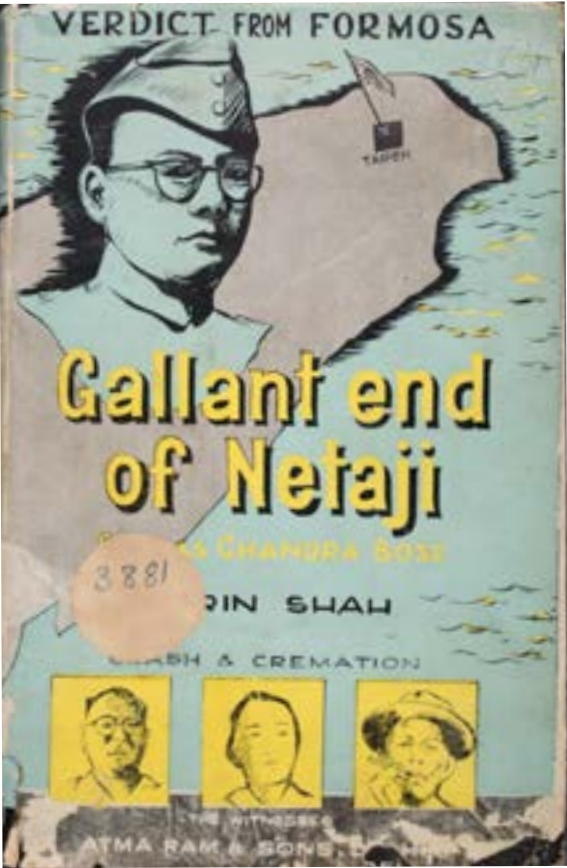
ESTIMATE

INR 20,000 – 30,000

PROVENANCE

Private Collection
Hi. Sec. S. Nangal Thakaran, Delhi, Library

*Foreword by Dr. Hare Krushna Mahtab
(Governor of Bombay).
Published by Atma Ram & Sons, Delhi. First edition.*



3.

Azad Hind Party: Policy and Principles

Pritish Ch. Raychaudhury

1967

7 x 5 in

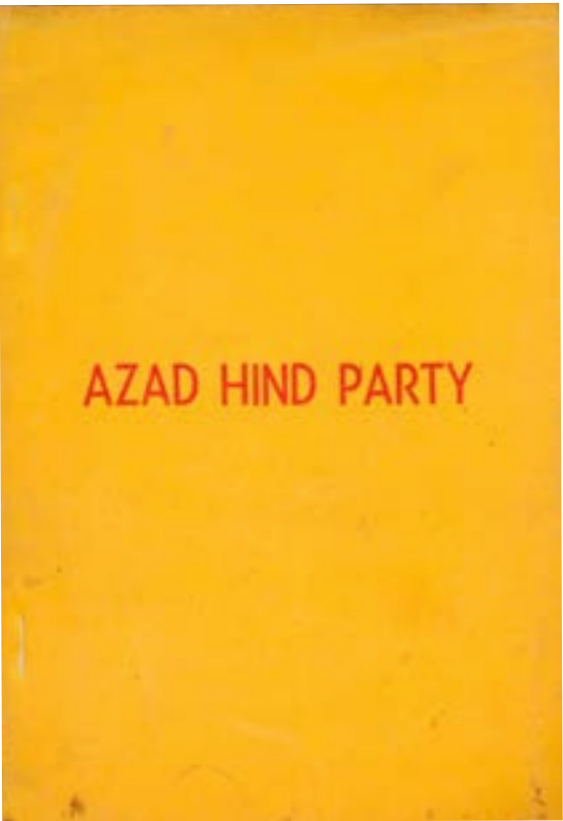
ESTIMATE

INR 20,000 – 30,000

PROVENANCE

Private Collection

*Foreword by Pritish Ch. Raychaudhury.
First Edition.*



4.

Testament of Subhas Bose : 1942 – 1945

Arun

1946

8 x 5 in

Signed and dated by various owners

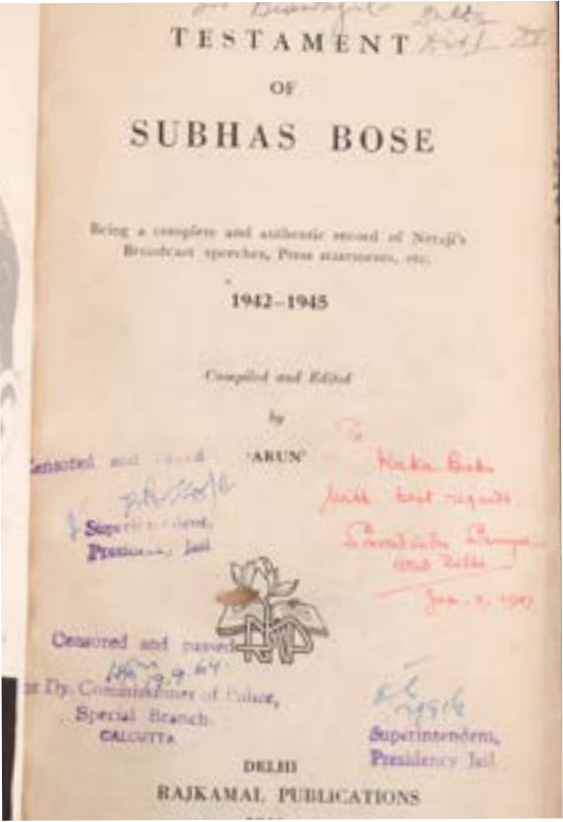
ESTIMATE

INR 30,000 – 40,000

PROVENANCE

Private Collection;
District Intelligence Branch Jalpaiguri, 1962.

*Published by Rajkamal Publications, Delhi.
First edition.
Dedicated to Rani.*



5.

Epic Fast

Pyarelal

1932

8 x 5 in

ESTIMATE

INR 12,000 - 15,000

PROVENANCE

Private Collection

*Published by Mohanlal Magalal Bhatt,
Gandhi Road, Ahmedabad.
First Edition.*



6.

The Mission of Life

Subhas Chandra Bose

1949

9 x 5.5 in

Signed and gifted to Nirmal Chatterjee by the editor

ESTIMATE

INR 30,000 - 50,000

PROVENANCE

Estate of Nirmal Chatterjee,
Professor at Santiniketan

*Published by Thacker, Spink & Co. Ltd., Calcutta.
Edited by Gopallal Sanyal.*



7.

Nehru On Gandhi

Ricahrd J. Walsh

1948

7.5 x 5 in

Signed and dated

"Nirmal Chandra Chatterjee Santinketan 1948"

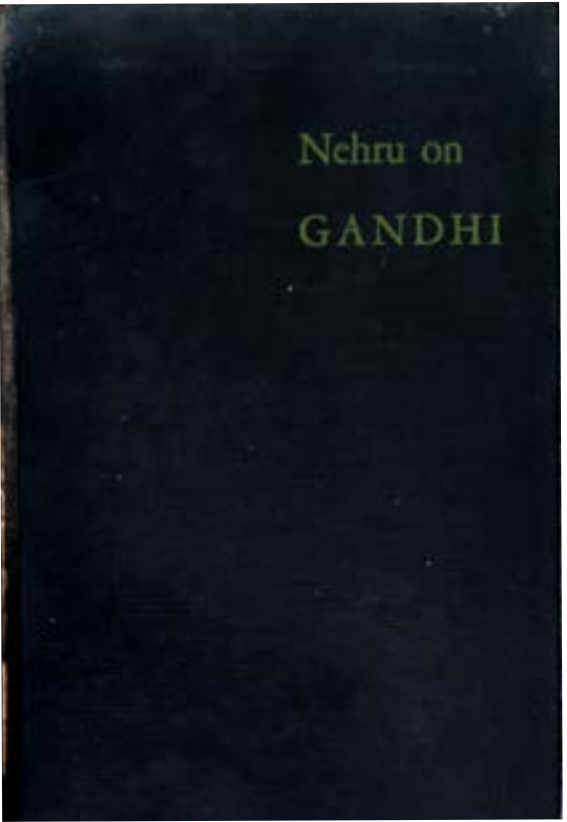
ESTIMATE

INR 30,000 - 50,000

PROVENANCE

Estate of Nirmal Chatterjee,
Professor at Santiniketan

*Published The John Day Company, New York.
Issued by H V Kamath (Gen. Sec. All India Forward Bloc)*



8.

Gandhi Memorial Peace Number

Khsitis Roy

1949

9.5 x 6.5 in

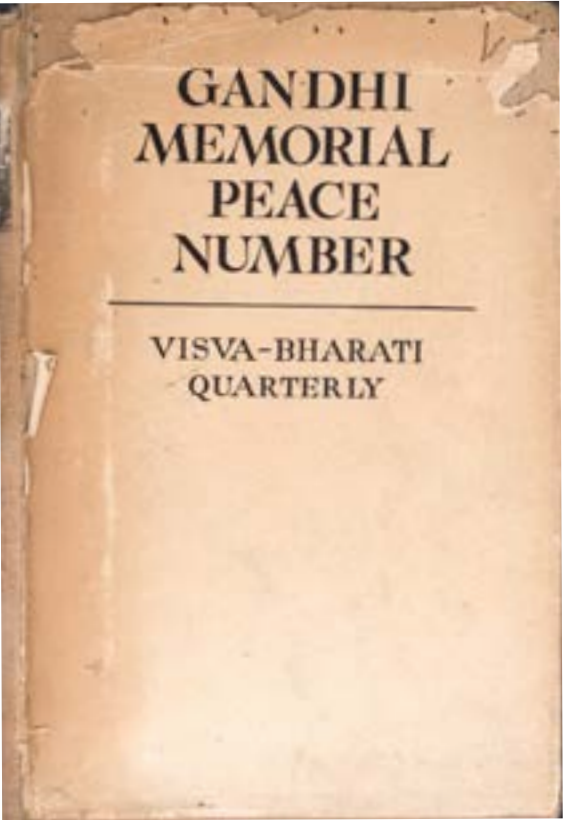
ESTIMATE

INR 30,000 - 50,000

PROVENANCE

Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

*Published The Visva-Bharati Quarterly,
Santiniketan.*



9.

Gandhi: His Gift of the Fight

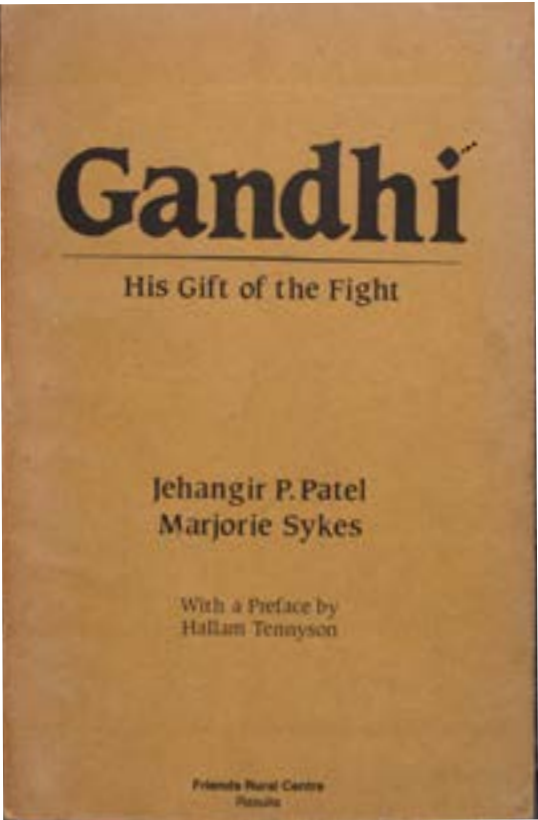
Jehangir P. Patel And Marjorie Sykes

1987
8.5 x 5.5 in

ESTIMATE
INR 20,000 - 30,000

PROVENANCE
Estate of Nirmal Chatterjee,
Professor at Santiniketan

Published by Friends Rural Centre, Rasulia.
Preface by Hallam Tennyson. First Edition.



10.

A Bunch of Old Letters

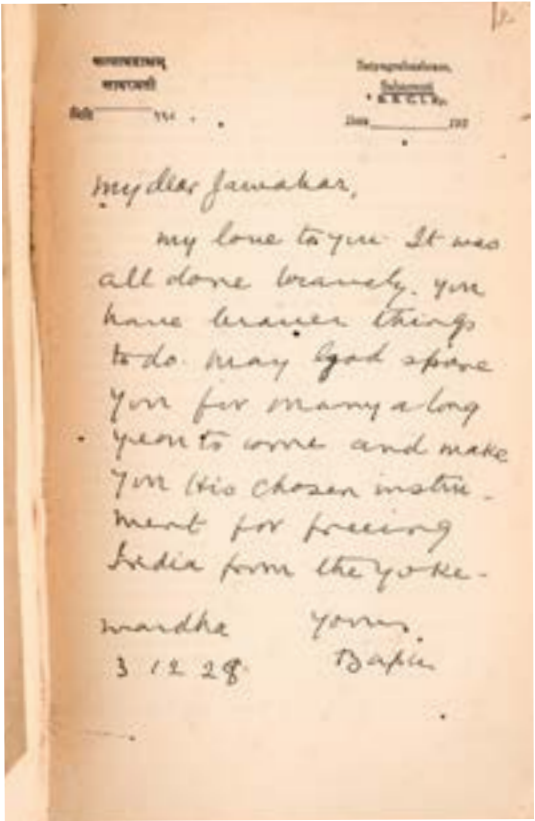
Jawaharlal Nehru

1958
9 x 5.5 in
Signed and dated
" Nirmal Chatterjee Rajpur 1959"

ESTIMATE
INR 30,000 - 50,000

PROVENANCE
Estate of Nirmal Chatterjee,
Professor at Santiniketan

Published by Asia Publishing House, Bombay.



11.

The Discovery of India

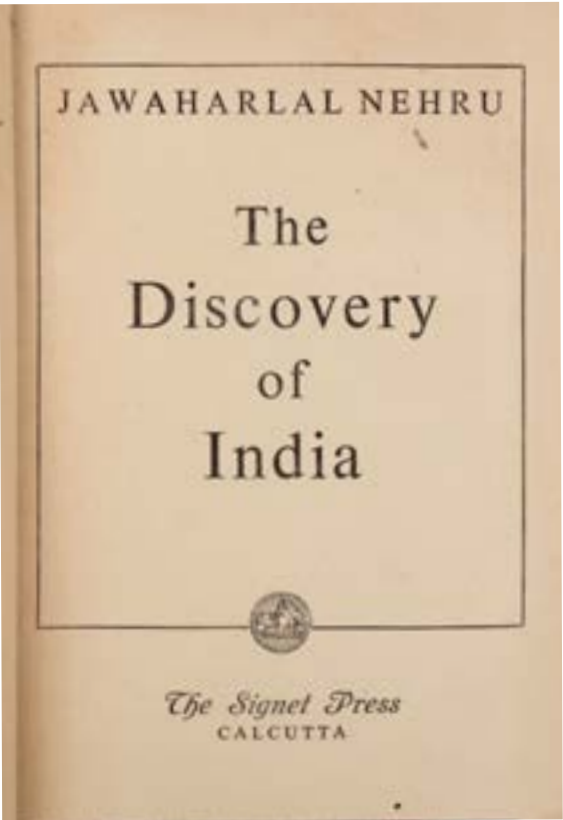
Jawaharlal Nehru

1946
8.5 x 5.5 in

ESTIMATE
INR 80,000 - 1,00,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore – Mira Chatterjee Estate

Published by The Signet Press, Calcutta.
First edition.



12.

Portraits of Mahatma Gandhi

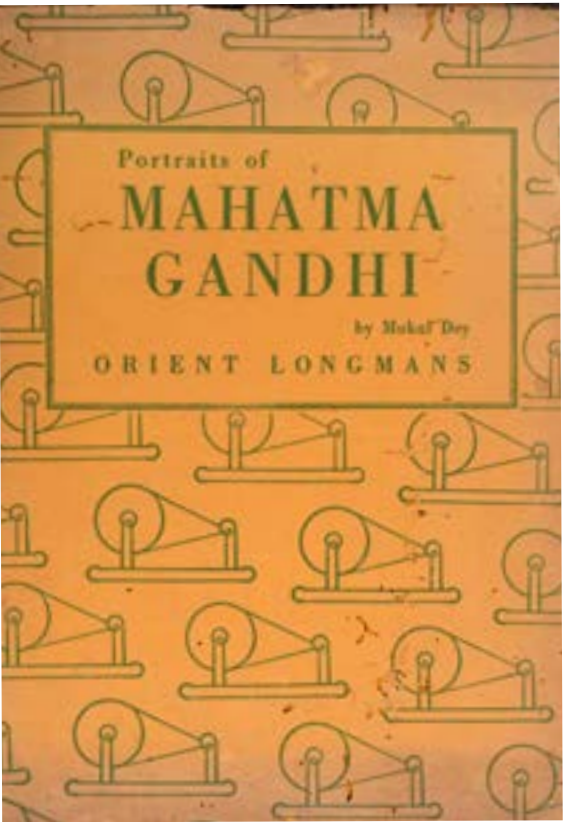
Mukul Dey

1948
11 x 9 in

ESTIMATE
INR 80,000 - 1,00,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore – Mira Chatterjee Estate

Published by Oriental Longmans Ltd., Bombay.
First edition.



HARIJAN SEVAK: GANDHI’S WEEKLY NEWSLETTER

The Harijan Movement was launched by the Congress leadership in 1932 in accordance to their socio religious approach to the dalit/low caste problem in India. Gandhi was against the use of this movement as a means to strengthen political activities of the Congress and felt like the issue was meant to be dealt with a different strategy.

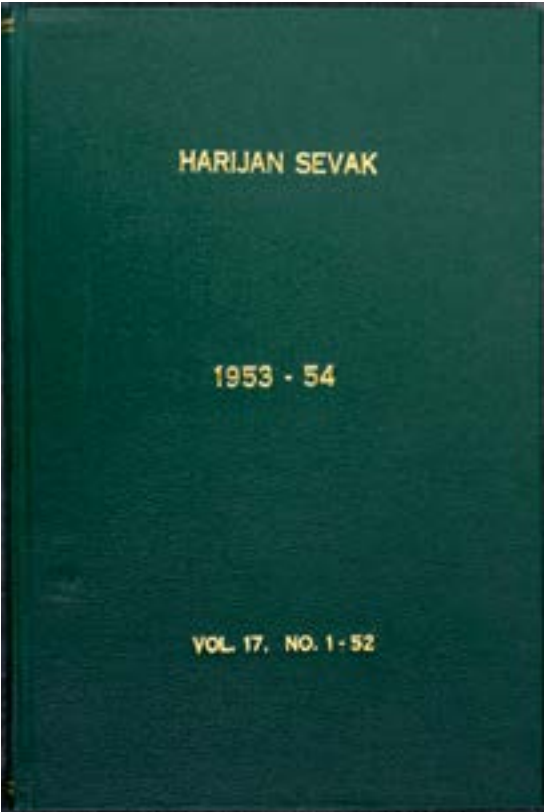
Gandhi’s strategy was to stress that untouchability had no sanction in hinduism and hindu scriptures, and to encourage hindus to change their opinion on depressed classes by patient means. He wanted to depresses classes to receive the same access to schools, temples, wells, etc so they could feel just as respected in society as others.

On the 25 September 1932, Gandhi broke his fast and decided to call depressed classes ‘Harijans.’ This renaming was part of his campaign against untouchability.

Soon after, he established the All India Anti Untouchability League or the Harijan Sevak Sangh. Members or Caste Hindu reformers were called Harijan Sevaks.

In 1932, when Gandhi was arrested his journal Young India was discontinued. To popularize the Harijan movement, Gandhi decided to introduce a new journal under the same name of Harijan. The first issue appeared on the 11th of February 1933 from Poona with R. V. Shastri as the editor. Harijan dealt with questions regarding untouchability and was carried out in socio-religious approach.

The Harijan was later edited by Mahadev Desai in 1935 and had its headquarters in Poona and then later in Madras. In 1940, it was suspended during the Indian Satyagraha movement. It was later revived by the Navajivan Press in January 1942 but was banned later that year by the British Government in India. It was revived once again in February 1946. The editor at the time was Pyarelal and he continued till 1948. The journal stopped in 1958.

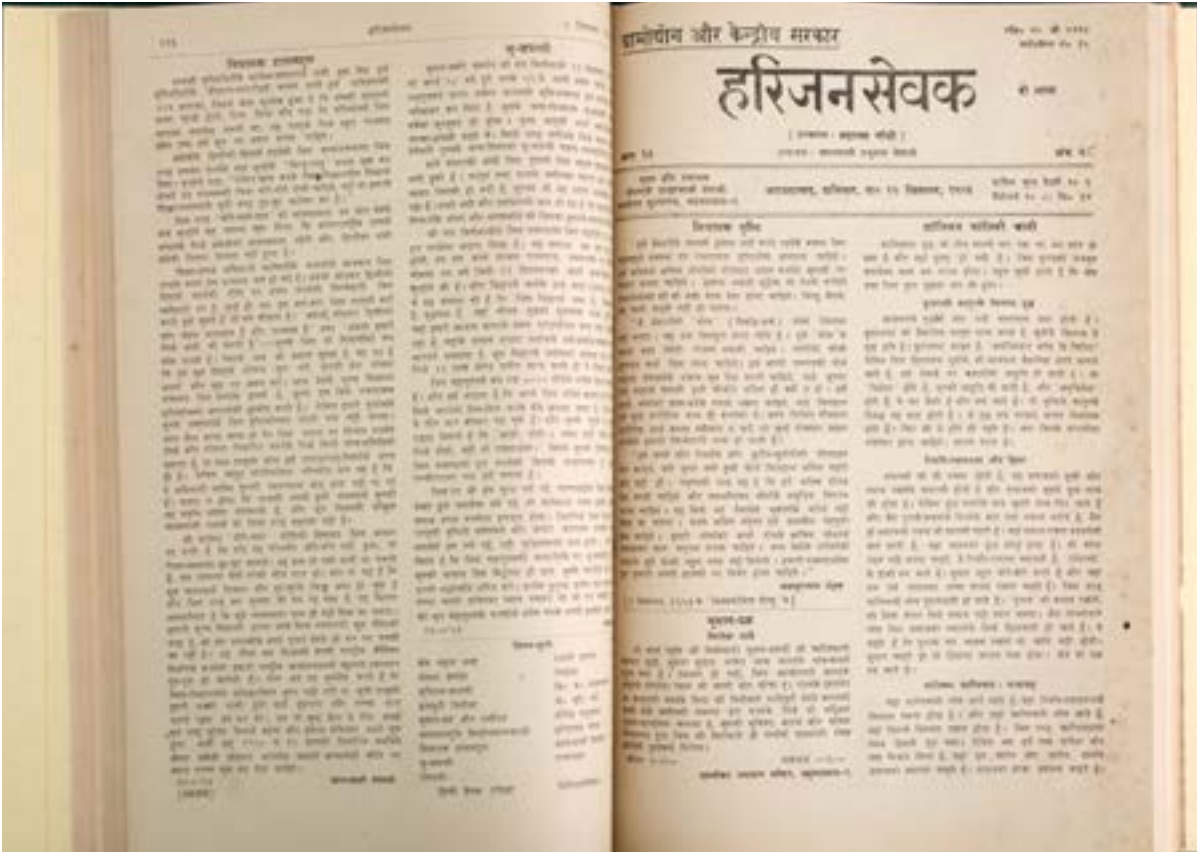


In addition to the Harijan that was published in English, the weekly appeared in other Indian languages too. They were published in Hindi, Gujarati, Bengali and Tamil with the same content. All editions had a column which gave reports of Harijan work done by congress workers as well as the Harijan Sevaks. The rest of the weekly was devoted to the depressed classes.

The Hindi edition of the Harijan was called Harijan Sevak. It was first published on the 23rd of February, 1933 and was the same size as the English edition. The editor was Viyogi Hari and was published in Delhi by the Hindustan Times Press.

In addition, Gandhi also led a Harijan Tour in 1932-1934 in several towns and cities in India to talk to the public regarding the untouchability issue. This was planned by the Harijan Sevak Sangh secretary A.V. Thakkar.

Gandhi felt that the untouchability problem was caused by Hindus and was meant to be rectified by them too.



भू-जयन्ती

विधातक टालमटोल
बम्बई सुनिवसिटीके वाजिस्-भांसलरने अभी कुछ दिन हुए सुनिवसिटीके विधान-समारोहमें भाषण करते हुए संविधानकी ३४३ धाराका, जिसमें अंश झुल्लेस हुआ है कि संघकी सरकारी भाषा हिन्दी होगी, निक्र किया और कहा कि संविधानमें जिस धाराका समावेश जरूरी था; वह राष्ट्रके लिये बहुत लाभप्रद होगा तथा हमें उस पर अमल करना चाहिये।

अंग्रेजीसे हिन्दीकी दिशामें बढ़नेकी जिस आवश्यकताका जिस तरह समर्थन करनेके बाद उन्होंने 'किन्तु-परंतु' करना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा, "लेकिन खास करके विश्व-विद्यालयीन शिक्षाके क्षेत्रमें यह संक्रमणकी क्रिया धीरे-धीरे होनी चाहिये, नहीं तो हमारी शिक्षा-व्यवस्थाके घूरी तरह टूट-फूट जानेका डर है।"

जिस तरह 'धीरे-बलो-बाद' की आवश्यकता पर जोर देनेके बाद उन्होंने यह बताना शुरू किया कि आंतरराष्ट्रीय सम्पर्क साधनेके लिये अंग्रेजीकी आवश्यकता रहेगी और हिन्दीका अभी अंग्रेजी वित्तना विकास नहीं हुआ है।

शिक्षा-क्षेत्रके अधिकारी व्यक्तियोंके भाषणोंमें आजकल जिस तरहके कथन अंक सामान्य अंग हो गये हैं। अंग्रेजी छोड़कर हिन्दीकी दिशामें बढ़नेकी नीति पर अमल करनेकी जिम्मेदारी जिन व्यक्तियों पर है, उन्हें ही जब हम बार-बार जिस तरहकी बातें करते हुये सुनते हैं तो मन खीझता है। 'अंग्रेजी छोड़कर हिन्दीकी ओर बढ़ना आवश्यक है और लाभप्रद है' तथा 'अंग्रेजी हमारे लिये अभी भी जरूरी है'—अनुके अति दो विधानोंको सब लोग मानते हैं। जिसके बाद जो सवाल उठता है, वह यह है कि हम उस दिशामें सोचना शुरू करें, अनुकी अंक योजना बनायें और उस पर अमल करें। आज देशमें जुच्च शिक्षाका संचालन जिन लोगोंके हाथमें है, उनसे हम जिस रचनात्मक दृष्टिकोणको अपनानेकी उम्मीद करते हैं। लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे अनुके वक्तव्योंमें जिस दृष्टिकोणका कोई पता नहीं चलता। अगर अंश माना जाता हो कि जिस सवाल पर विचार करनेके लिये और योजना निर्धारित करनेके लिये किसी जांच-समितिकी जरूरत है, तो जिस तरहकी जांच हमें राष्ट्राध्यक्ष-रिपोर्टमें प्राप्त ही है। लेकिन प्रस्तुत परिस्थितिका शोचनीय अंश यह है कि ये अधिकारी व्यक्ति पुरानी व्यवस्थाका मोह छोड़ नहीं पा रहे हैं। कहना न होगा कि आजकी बदली हुई अवस्थामें अनुकी यह प्रवृत्ति सर्वथा प्रतिगामी है, और उस शिक्षाकी मौजूदा व्यवस्थाकी रक्षामें भी किसी तरह सहायक नहीं है।

श्री वाडिया 'धीरे-बलो' नीतिकी हिमायत जिस आधार पर करते हैं कि यदि यह परिवर्तन धीरे-धीरे नहीं हुआ, तो शिक्षा-व्यवस्था टूट-फूट जायगी। यह बात तो सभी मानी जा सकती है।

भूदान-यज्ञके प्रवर्तक श्री संत विनोबाजी ११ सितम्बर, १९५३ को अपने ५८ वर्ष पुरे करके ५९ वें वर्षमें प्रवेश करेंगे। महापुरुषने अपना सर्वस्व भारतकी भूमि-समस्या हल करनेके लिये न्योछावर कर दिया है, उसके जन्म-दिवसको भू-जयन्ती के तौर पर मनाया जायेगा। पूज्य बापूजी अपने जन्म-दिवसको चरखा-द्वादशी कहते थे। इसी तरह जमीनके लिये जन्म देनेवाले पुरुषके जन्म-दिवसको भू-जयन्ती कहना स्वाभाविक है।

सारे संसारकी आंखें जिस पुरुषके जिस महान प्रयत्नकी ओर लगी हुई हैं। कानून तथा कलसे जमीनका सवाल हल करने के लिये जिनको हो गयी है, अनुकी भी यह प्रयोग अकर्मण्य रहा है। सबसे बड़ी और प्रसन्नताकी बात तो यह है कि भारतीय विचारोंके लोगों और संस्थाओंमें भी जिसका हृदयसे स्वागत किया जा रहा है।

श्री संत विनोबाजीने जिस समस्याको जिस पद्धतिसे हल करनेका संकल्प किया है। यह समस्या जब तक हल होगी, तब तक अपने आश्रम परमधाम, पवनारको न छोड़ेंगे। धोषणा गत वर्ष इसी ११ सितम्बरको अपने जन्म-दिवस मनाएंगे की है। और बिहारमें जानेके बाद आरा (बक्सर) में यह धोषणा की है कि जिस बिहारमें गया है, तब तक वृद्धगया है, जहाँ गौतम बुद्धको बुद्धत्वका मान है। जहाँ हमारे आजाद भारतके प्रथम राष्ट्रपतिका जन्म हुआ है, जहाँके शासक सम्राट अशोकके धर्म-प्रवर्तन-चक्रमाला भारतने अपनाया है, उस बिहारमें जमीनकी समस्या हल करनेके लिये ३२ लाख एकड़ जमीन प्राप्त करके ही बिहार हल होगा।

जिस महापुरुषने अब तक ३००० मीलके करीब पैदल यात्रा की है। और हमें बताया है कि अपने जिस कठिन स्वकीय प्रयत्नके लिये अपनेको तिल-तिल करके कैसे खपाया जाता है। जिसने तीन बार बीमार पड़ चुके हैं। और अनुके मुँहसे निकलते हैं कि 'आओ, दोड़ो। समय रहते मैं भी लड़ूँ, नहीं तो पछताओगे।' जिससे अनुकी निष्ठा, जिस समस्याको हल करनेकी कितनी आवश्यकता है, जिस सम्मिलितताका पता हमें चलता है।

जिस पर भी हम मुस्कराते हैं, लापरवाहीसे नहीं देखते हुये अकर्मण्य बने रहें, तो जानेवाला समय हमें जवाब तलब करनेका हकदार होगा। जिसलिये जिस राष्ट्रकी दृष्टिसे सर्वप्रथम और अत्यंत आवश्यकता का अनुभव करनेमें हम लगे रहें, यही बुद्धिमत्ताकी बात होगी। जिस विनय है कि जिस महापुरुषकी जन्म-तिथि पर, भू-जयन्ती के तौर पर मनाया जाये।

ग्रामोद्योग और केन्द्रीय सरकार

हरिजनसेवक

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७

सम्पादक : सगनभाभी प्रभुदास देसाजी

अंक २८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवनजी डाह्याभाभी देसाजी
स्वकीय मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १२ सितम्बर, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें २० ६
विदेशमें २० ८; शि० १४

विधायक दृष्टि

"हमें बेकारीके संबंधमें हमेशा बातें करते रहनेके बजाय जिस मूल्यपूर्ण समस्या पर रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये। हमें अधिकसे अधिक लोगोंको रोजगार प्रदान करनेके अपायों पर विचार करना चाहिये। हमारा असली अद्देश्य तो देशके करोड़ों विद्यार्थियोंको सौ फी सदी काम देना होता चाहिये। किन्तु बेशक, यह किन्ही आदमोंमें नहीं हो सकता।

"मैं बेकारोंको 'डोल' (निर्वाह-खर्च) देनेमें विस्वास नहीं करता। यह अंक बिल्कुल गलत नीति है। हमें 'डोल' के बजाय काम देनेकी योजना बनानी चाहिये। लोगोंको कोई उत्पादक कार्य दिया जाना चाहिये। हमें अपनी जरूरतकी चीजें बाहरसे मंगवानेके बजाय खुद पैदा करनी चाहिये, चाहे अनुका दाम बाहरसे मंगाओ। अनुकी चीजोंमें अधिक ही क्यों न हो। हमें अपने लोगोंको काम-बंधसे लगाये रखना चाहिये, चाहे फिलहाल इन अनुं शारीरिक काम ही करनेको दें। अगर शिक्षित नौजवान शारीरिक कार्य करना स्वीकार न करें, तो उन्हें रोजगार प्रदान करनेकी हमारी जिम्मेदारी खत्म हो जाती है।

"हमें अपने छोटे पैमानेके और कुटीर-उद्योगोंको प्रोत्साहन देना चाहिये, भले अनुमें बनी हुई चीजें फिलहाल अधिक महंगी और भद्दी हों। मजदूरीकी बात यह है कि हमें अधिक दौलत पैदा करनी चाहिये और क्रयशक्तिका लोगोंमें समुचित वितरण करना चाहिये। यह सिर्फ बड़े पैमानेके उद्योगोंके जरिये नहीं किया जा सकता। सबसे अधिक महत्व हमें मानवीय पहलूको देना चाहिये। हमारे लोगोंको अपने रोजके आर्थिक जीवनमें स्वाधिका भाव अनुभव करना चाहिये। अन्य देशोंके तरीकोंकी नकल हमें कोई बहुत मदद नहीं मिलेगी। हमारी समस्याओंका हल हमारी अपनी हालतों पर निर्भर होना चाहिये।"

जवाहरलाल नेहरू

[१ सितम्बर, १९५३ के 'अिकानामिक रीव्यू' से]

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

दो साल पहले श्री विनोबाजी भूदान-यज्ञकी जो क्रान्तिकारी कल्पना सुनी, उसका अद्वात सन्देश आज भारतके गांव-गांवमें पहुंच गया है। अतिना ही नहीं, जिस आन्दोलनने भारतके गहरे लोगोंका ध्यान भी अपनी ओर खींचा है। राज्यके हस्तक्षेप या कानूनकी मददके बिना श्री विनोबाजी शान्तिपूर्ण ढंगसे भारतकी सबसे बड़ी जमीनकी समस्या हल करनेके लिये जो अहिंसक भूदान-आन्दोलन चलाया है, उसकी भूमिका, आरंभ और क्रमिक विकासका परा निका श्री विनोबाजीके ही शब्दोंमें पाठकोंको जिस

शान्तिमय क्रांतिकी चाबी

कोरियाका युद्ध, जो तीन सालसे चल रहा था, अब शांत हो गया है और वहाँ सुलह हो गयी है। जिस सुलहको मजबूत बनानेका काम अब करना होगा। बहुत खुशी होती है कि अंक दफा जिस दुष्ट युद्धका अंत हो रहा है।

कुदरतके कानूनके खिलाफ युद्ध

आजकलके युद्धोंमें अंक बड़ी सतरनाक बात होती है। कुदरतका जो वैज्ञानिक कानून माना जाता है, उसीके खिलाफ ये युद्ध होते हैं। कुदरतका कानून है, 'सर्वांश्चिह्न ऑफ दि फिटेस्ट' लेकिन जिन हिंसात्मक युद्धोंमें, जो आजकल वैज्ञानिक ढंगसे चलाये जाते हैं, बड़े पैमाने पर जवानोंकी आहुति दी जाती है। जो 'फिटेस्ट' होते हैं, अनुकी आहुति दी जाती है; और 'अन्फिटेस्ट' होते हैं, वे घर बैठते हैं और बच जाते हैं। तो सृष्टिके कानूनके विरुद्ध यह बात होती है। ये युद्ध सब तरहके अत्यंत विनाशक होते हैं। फिर भी ये होते ही रहते हैं। अतः इनके कारणोंका संशोधन होना चाहिये। कारण स्पष्ट हैं।

स्थिति-स्वापस्ता और हिंसा

समाजमें जो भी रचना होती है, वह समाजकी मुर्खी और स्वस्थ रखनेके खयालसे होती है और समाजको उससे कुछ लाभ भी होता है। लेकिन कुछ बरसोंके बाद उसके लाभ मिट जाते हैं और जैसे पुराने मकानके गिरनेके बाद नया मकान बनाते हैं, वैसे ही समाजकी रचना भी बदलनी पड़ती है। जहाँ समाज-रचना बदलनेकी बात आती है, वहाँ मानवको कुछ क्लेश होता है। जो क्लेश सहन नहीं करना चाहते, वे स्थिति-स्वापक कहलाते हैं, 'स्टेटस्को' के हामी बन जाते हैं। सुधार बहुत धीरे-धीरे करते हैं और जहाँ तक बने समाजका ढांचा कायम रखना चाहते हैं। जिस तरह शान्तिवादी लोग पुरानवादी हो जाते हैं। 'पुरान' को कायम रखोगे, तो बिना कतल किये समाज नहीं बदल सकता। ऐसे सोचनेवाले लोग फिर समाजको बदलनेके लिये हिंसावादी हो जाते हैं। वे कहते हैं कि पुराना रूप कायम रखोगे तो क्रांति नहीं होगी। सुधार चाहते हो तो हिंसाका आश्रय लेना होगा। ऐसे दो पक्ष पड़ जाते हैं।

शान्तिमय क्रांतिवाद : सत्याग्रह

जहाँ शान्तिवादी लोग आगे बढ़ते हैं, वहाँ स्थिति-स्वापकतामें विश्वास रखना होता है। और जहाँ क्रांतिवादी लोग आते हैं, वहाँ हिंसामें विश्वास रखना होता है। जिस तरह क्रांतिवादका

13.

The Calcutta Municipal Gazette:
Tagore Birthday Special Supplement

Amal Home

May 1941
14 x 8.5 in
Signed by Nirmal Chatterjee

ESTIMATE
INR 10,000 - 12,000

PROVENANCE
Estate of Nirmal Chatterjee,
Professor at Santiniketan

*Published by Office of the Registrar of Newspapers,
Calcutta.
Preface by Hallam Tennyson. First Edition.*



14.

Mao Tse-Tung and Gandhi

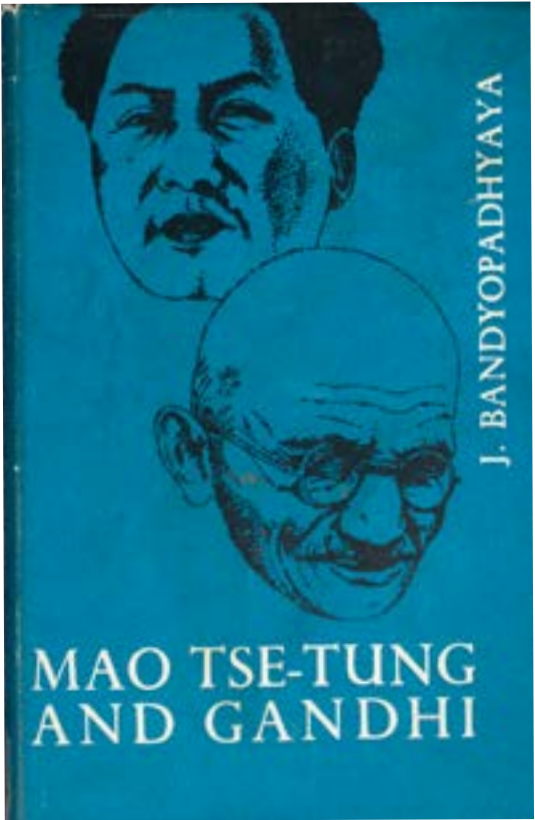
Jayantanuja Bandyopadhyaya

1973
8.5 x 5.8 in

ESTIMATE
INR 50,000 - 1,00,000

PROVENANCE
Private Collection; Sitaram Bhartia Institute of
Scientific Research Calcutta

*Allied Publishers, Bombay.
First edition.*



15.

Harijan Sevak

Mohandas Karamchand Gandhi

1953-54
13 x 8.5 in

ESTIMATE
INR 4,00,000 - 5,00,000

PROVENANCE
Private Collection

*Volume 17, no. 1 -52.
Written in Hindi.*



16.

Netaji's Life and Writings

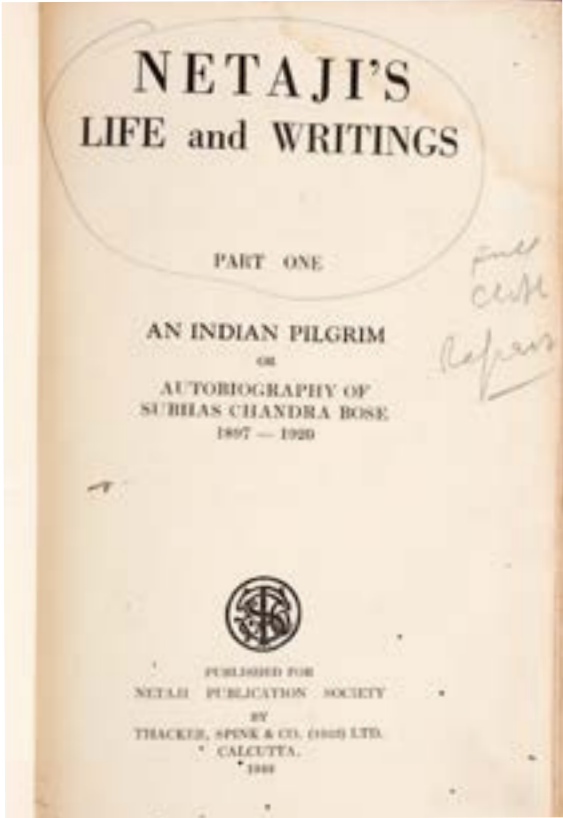
Various

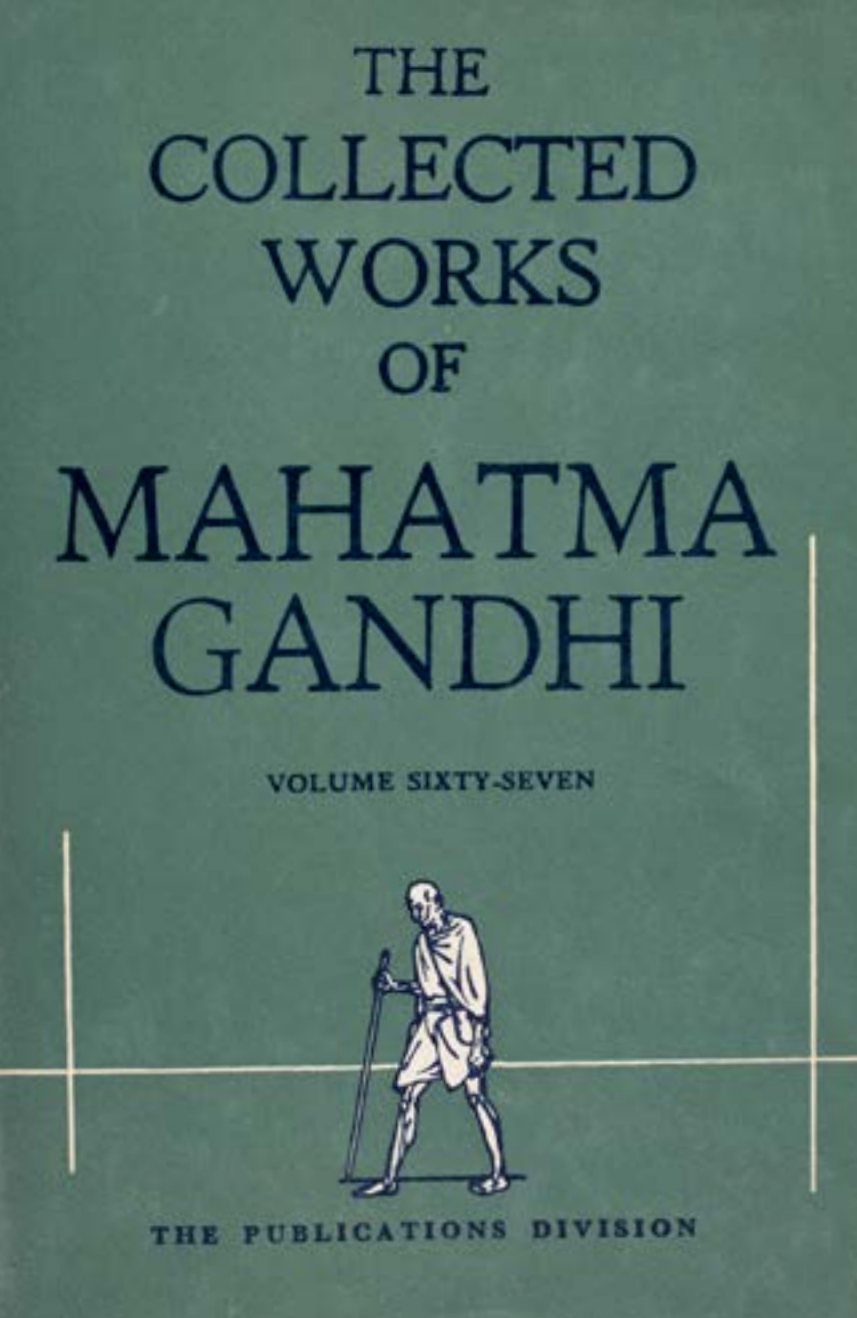
1948
9 x 5.5 in

ESTIMATE
INR 50,000 - 75,000

PROVENANCE
Private Collection

*Volume 17, no. 1 -52.
Written in Hindi.*

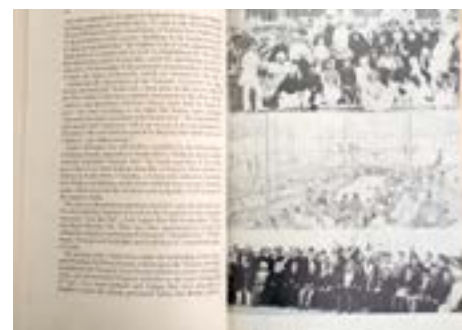
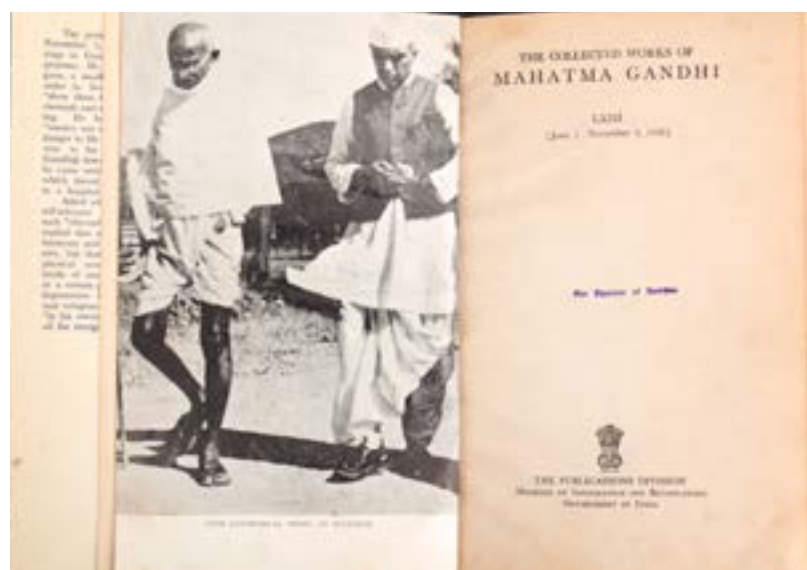




THE COLLECTED WORKS OF MAHATMA GANDHI

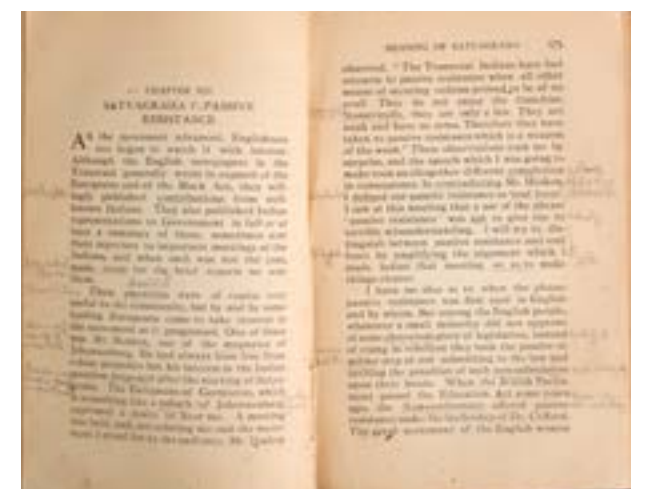
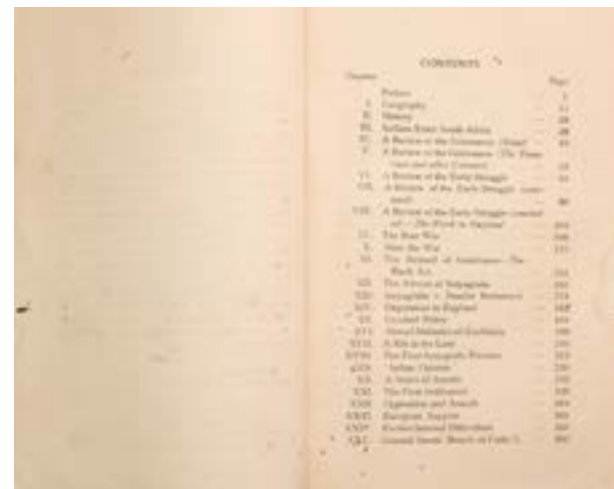
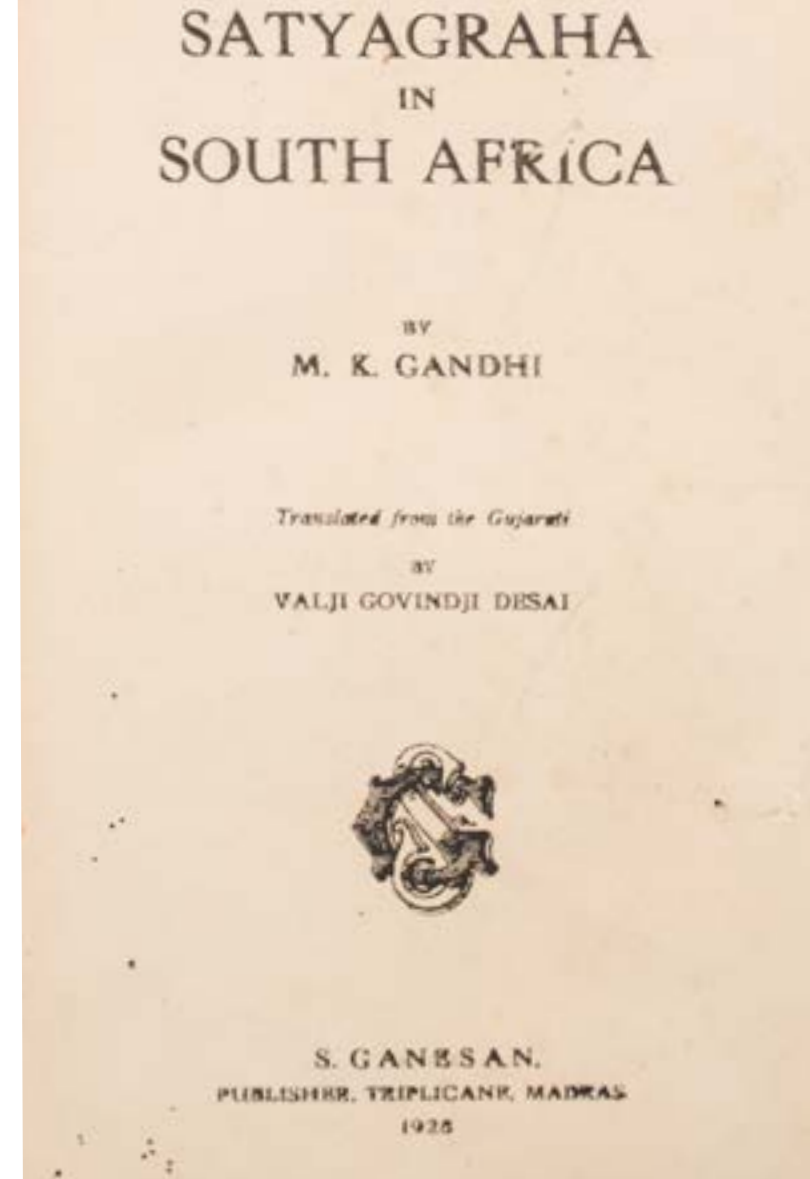
The Collected Works of Mahatma Gandhi took roughly 40 years to be compiled and spans from 1884 to 1948 when Gandhi was assassinated. The collection includes Gandhi's writings, letters, essays, notes and interviews. The collection goes into great detail over 100 volumes about the time when Indian was under British rule and was fighting for independence.

The goal of this series was to give an insight into Gandhi's very public life. The series took about forty years to be compiled and had three editor-in-chief and two deputy editors by the time the series finished. Today, all 100 volumes of the first edition are very difficult to find.



SATYAGRAHA IN SOUTH AFRICA

Satyagraha in South Africa was about the satyagraha movement that lasted for eight years and was one of Gandhi's first attempts to use this principle to politics. He used this technique to counteract the social, economic and political injustices that suppressed freedom. This was originally written in Gujarati and an English version was first published in 1928.



"Satyagraha is a priceless and matchless weapon and that those who wield it are strangers to disappointment or defeat"

**Mahatma Gandhi,
Satyagraha in South Africa**

17.

Mahatma Gandhi - 70 Volumes

Mohandas Karamchand Gandhi



17.

Collected Works of Mahatma Gandhi

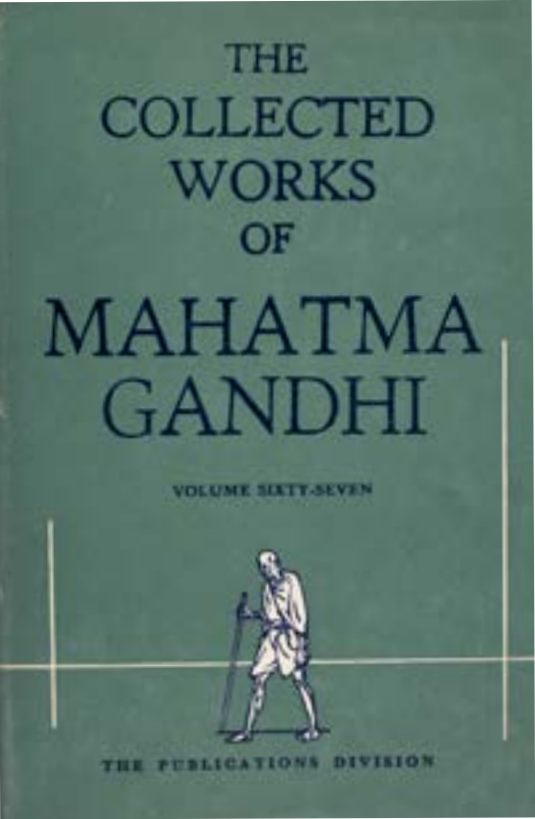
Mohandas Karamchand Gandhi

9.5 x 6.5 in
Signed by Nirmal Chatterjee

ESTIMATE
INR 2,00,000 - 6,00,000

PROVENANCE
Private Collection

*Volumes 1, 4 - 15, 17 - 70, 73 - 75. (70 volumes).
Copyright by Navajivan Trust Ahmedabad.
Published by The Director,
The Publications Division, New Delhi.
First Edition.*



19.

Mahatma Gandhi: His own story

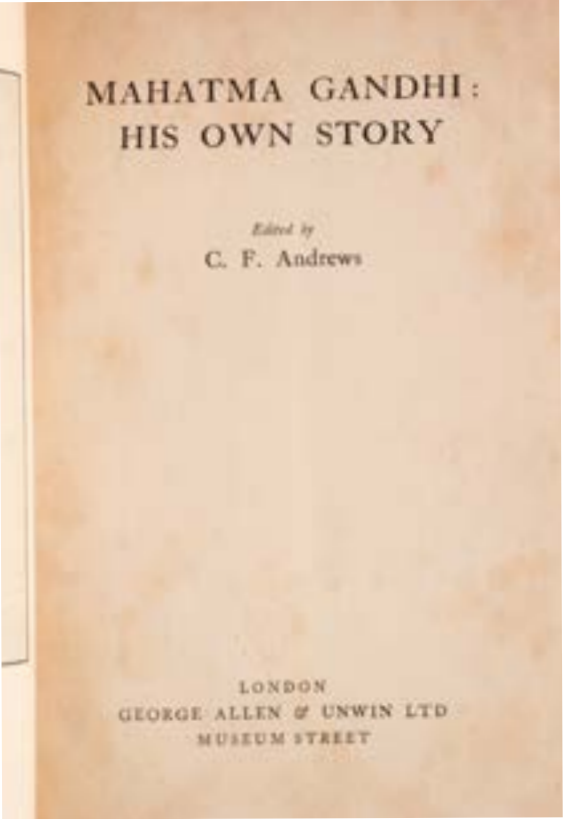
Charles Freer Andrews

1930
9x 5.5 in

ESTIMATE
INR 50,000 - 1,00,000

PROVENANCE
Private Collection

*Published by George Allen & Unwin Ltd., London.
Dedicated to Dr. and Mrs. Bahadur Singh.*



18.

Satyagraha in South Africa

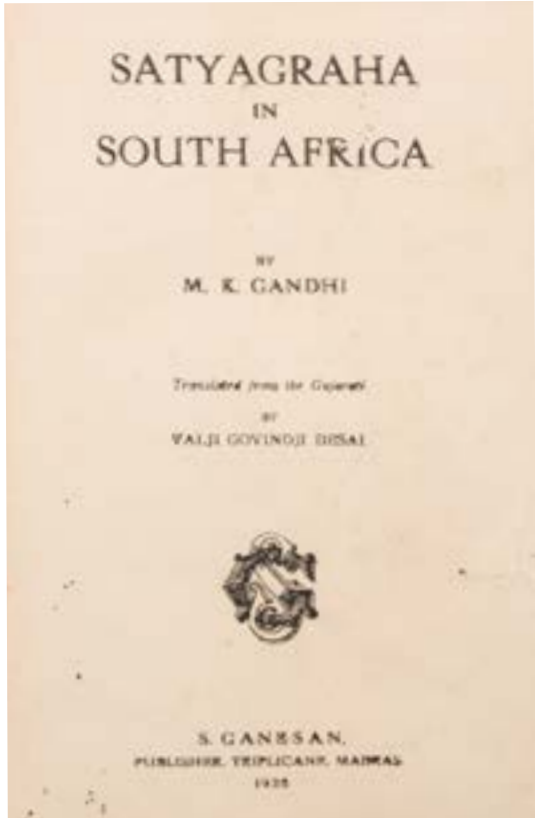
Mohandas Karamchand Gandhi

1928
8.5 x 5.5 in
Signed and dated "V. P. Agarwala June 31"
and "S.P. Agarwala Katra Amroha"

ESTIMATE
INR 2,00,000 - 3,00,000

PROVENANCE
Private Collection

*First Edition.
Translated from Gujarati by Valji Govindji Desai.
Published by S. Ganesan, Triplicane, Madras, 1928.
Dedicated to Maganlal K. Gandhi.*



20.

Towards Freedom: Autobiography of Jawaharlal Nehru

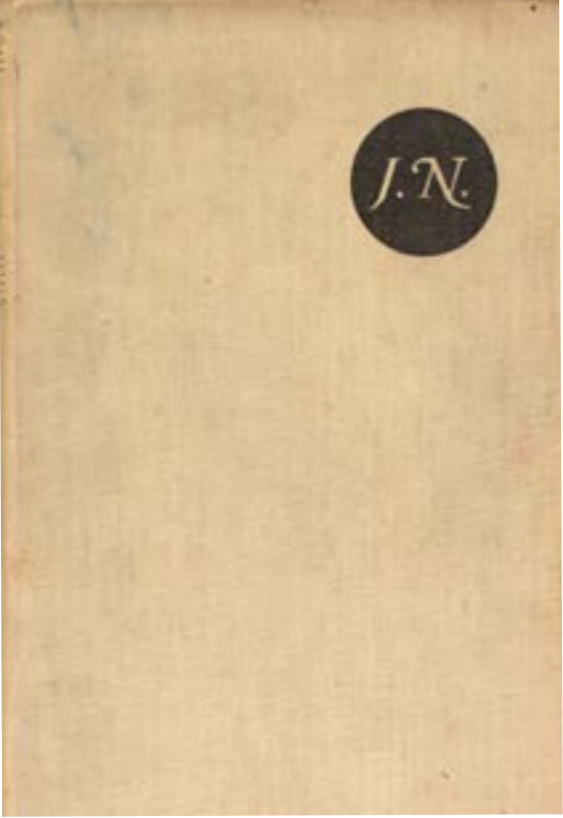
Jawaharlal Nehru

1942
9 x 6 in

ESTIMATE
INR 1,00,000 - 2,00,000

PROVENANCE
Private Collection

*Published by the John Day Company, New York.
Dedicated to Kamala. Ninth edition.*



AZAD HIND FAUJ

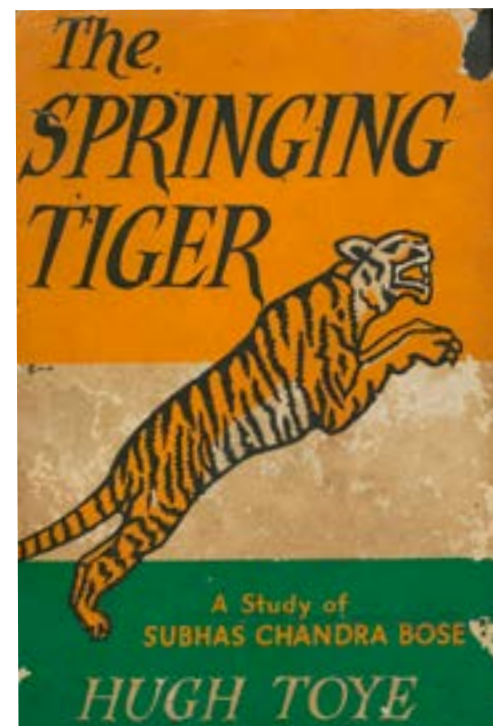
The end of World War II resulted in a turning point in history for India. It brought about a revolutionary change with multiple mutinies and a sense of political independence. The Indian National Army was formed in 1942 which was formed by Indian nationalist Rash Behari Bose. It was meant to help secure independence from the British Raj.

Subhas Chandra Bose was one of the leaders of the Indian National Army after he arrived in South East Asia. This army was meant to be the Provisional Government of Free India. As the The Indian National Army was supported by Japan, Italy, and Germany, troops were considered to be Axis supporters and a threat to the King of England.

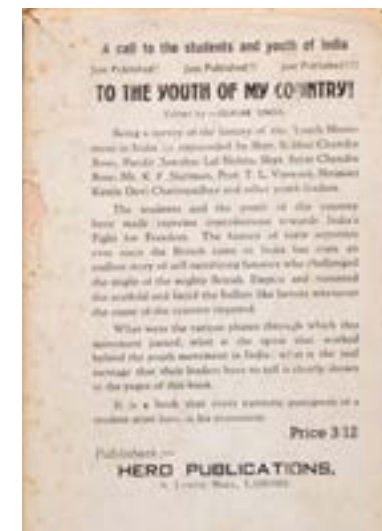
After World War II, a number of officers of the The Indian National Army were court-martialed for their acts during the war. However, their trials, more commonly known as the Red Fort Trials, attracted a lot of publicity. What was meant to negative publicity ended up garnering public sympathy. These people were considered to be patriots and they were hailed for fighting for India's freedom.

In 1946, there was a mutiny in the Royal Indian Navy that brought about nationalist feelings in the country and ultimately weakened British Raj's hold on India. As the British Indian armed forces could not be used by the British in India, the British had lost all power and control over the country.

The Springing Tiger is a historical account of the The Indian National Army published by British Colonel Hugh Toye. Toye worked as an intelligence officer in Burma during World War II. He was tasked with interrogating the The Indian National Army. This book details the formation of the The Indian National Army, its revival, and leadership by Subhas Chandra Bose, fights in Imphal and Kohima and the death of Bose. This a rare account and unbiased account of a British officer in the army.

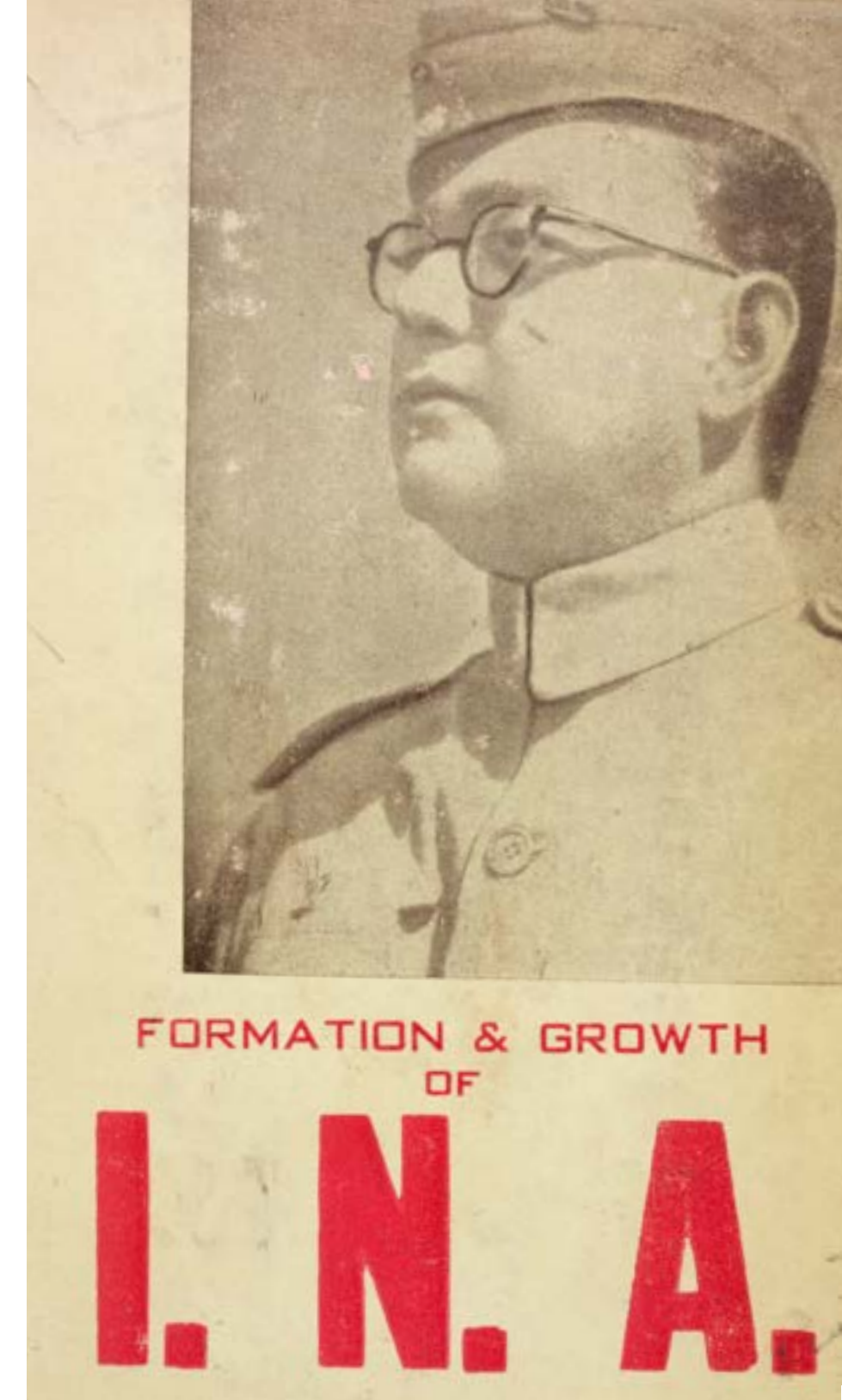


The Formation and Growth of The Indian National Army is another account of the Azad Hind Fauj under the leadership of Subhas Chandra Bose. Edited by Durlab Singh, it gives an insight into orders given by Bose, the correspondence between Bose and Lieutenant Dhillon, the charges against Gurbaksh Dhillon, Prem Sahgal and Shah Nawaz Khan as well as the The Indian National Army Trials.



Published in 1947 by Kesar Singh Giani, Civil administrator of the Provisional Government of Free India, The Indian Independence Movement in East Asia is an authentic account of the The Indian National Army and the Azad Hind Government. It discusses the Indian Revolutionaries in the east and the Indian Independence League, Rash Behari Bose, Subhas Chandra Bose, the formation of the Provisional Government of Free India and the The Indian National Army

Every attempt made by Indians to achieve freedom was considered to be a revolt for the British. However, these revolts, mutinies, and wars eventually contributed to India's freedom.





27.

***Mahatma: Life of Mohandas
Karamchand Gandhi***

Dinanath Gopal Tendulkar

21.

**The Calcutta Municipal Gazette:
23rd Anniversary and Independence
Commemoration Number:**

Amal Home

Dec 1947
14 x 8.5 in
Signed by Amal Home and gifted to Pulin Behari Sen.
Additional signature by Pulin Behari Sen.

ESTIMATE
INR 50,000 - 80,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

*December 1947 issue. Published by Office of the
Registrar of Newspapers, Calcutta. Pulin Behari was
in charge of the Publishing department, Santiniketan.*



22.

**Conferment of a Degree on Rabindranath
Tagore on behalf of Oxford University**

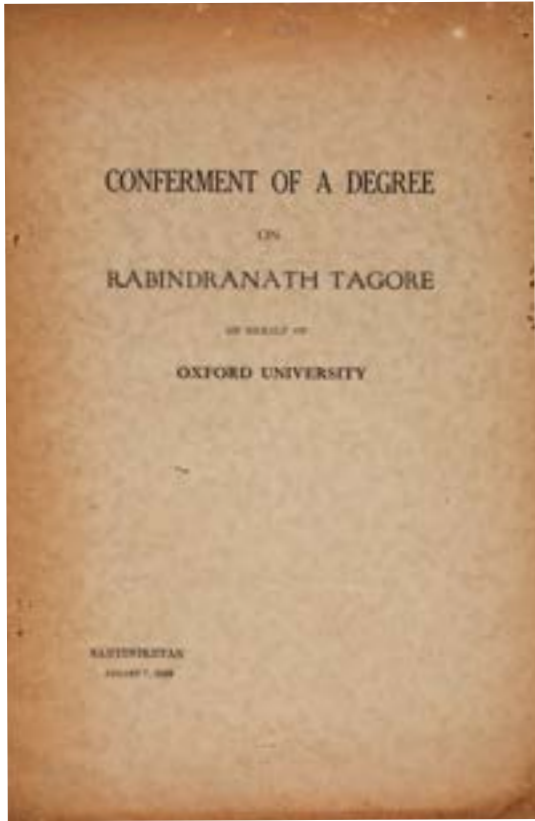
Visva Bharti University

1940
9.5 x 7 in

ESTIMATE
INR 30,000 - 50,000

PROVENANCE
Estate of Nirmal Chatterjee,
Professor at Santiniketan

*Printed by Prabhat Kumar Mukherjee at the
Santiniketan Press, Santiniketan, Bengal. Admit card
for Nirmal Chandra Chatterjee also inside.*



23.

Formation & Growth of INA

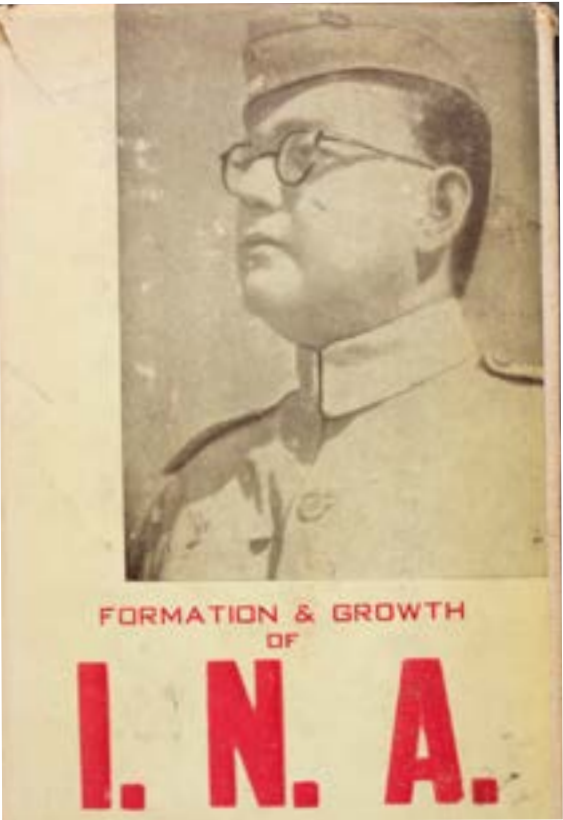
Durlab Singh

1946
8x 5 in

ESTIMATE
INR 2,00,000 - 3,00,000

PROVENANCE
Private Collection

*First edition. Published by S. Durlab Singh Prop.
Hero Publications, Lahore, January 1946.*



24.

**On to Delhi: 23 Enthralling speeches of
Subhas Chandra Bose**

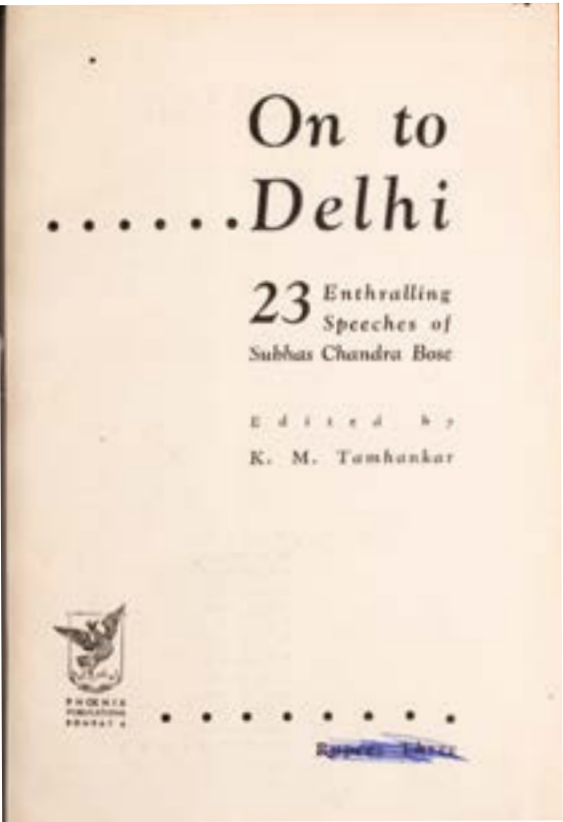
K. M. Tamhankar

1946
8 x 5 in

ESTIMATE
INR 5,000 - 10,000

PROVENANCE
Private Collection

Phoenix Publications, Bombay. First edition.



25.

The Springing Tiger: A Study of Subhas Chandra Bose

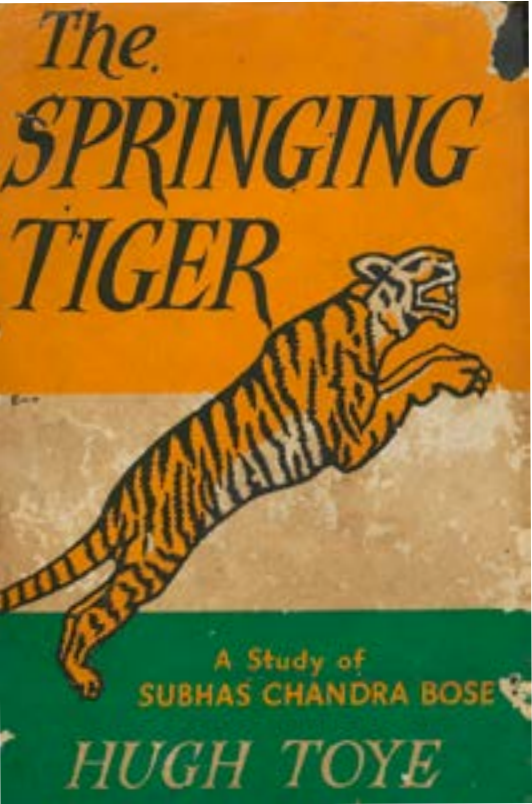
Hugh Toye

Dec 1959
9 x 5.5 in

ESTIMATE
INR 1,50,000 - 2,00,000

PROVENANCE
Private Collection

Foreword by Philip Mason. Published by Allied Publishers Pvt. Ltd., Bombay 1959. First edition.



26.

Indian Independence Movement in East Asia

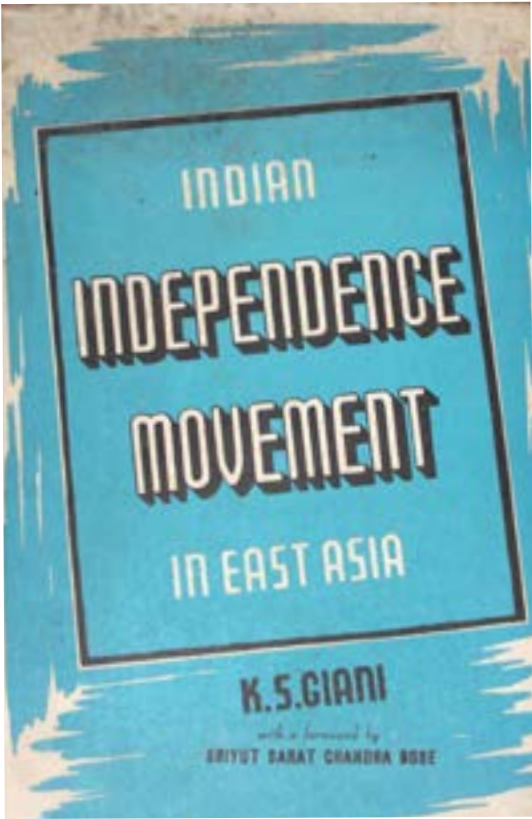
K. S. Giani

1947
10 x 6.5 in

ESTIMATE
INR 1,00,000 - 1,50,000

PROVENANCE
Private Collection

First edition. January 1947. Published by Sewa Singh, Singh Brothers, Anarkali, Lahore. 2000 copies.. Forward by Subhas Chandra Bose.



The Indian independence movement was a movement that spanned a total of 90 years; from 1857 until 15 August 1947, when India got independence from the British.

27.

Mahatma: Life of Mohandas Karamchand Gandhi

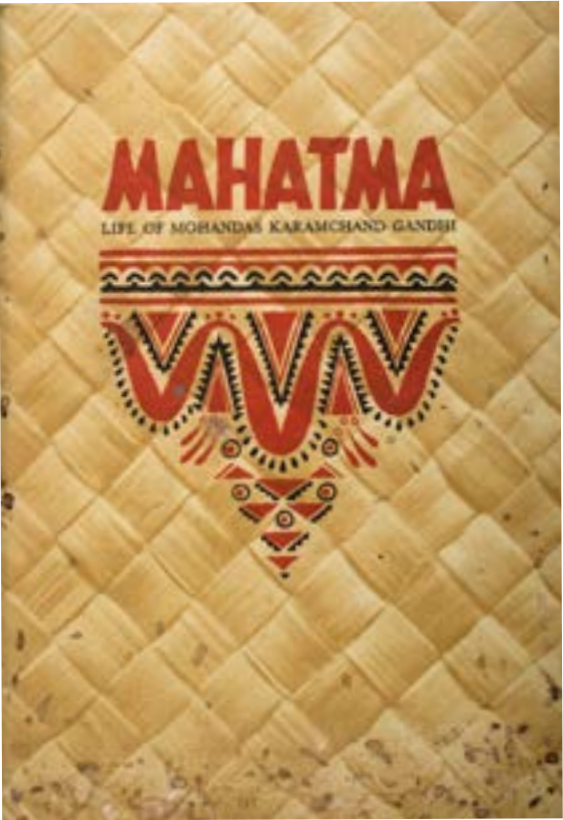
Dinanath Gopal Tendulkar

10 x 6.5 in

ESTIMATE
INR 80,000 - 1,00,000

PROVENANCE
Private Collection

8 volumes. Published by Vithalbhai K. Jhaveri & D.G. Tendulkar, Bombay. Foreword by Jawaharlal Nehru.



28.

Correspondence with Mr. Gandhi: August 1942 - April 1944.

Mohandas Karamchand Gandhi

1945
9.5 x 6.5 in

ESTIMATE
INR 20,000 - 30,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

Published by Navajivan Publishing House, Ahmadabad.



SHAM SUNDER LAL'S - CAWNPORE

The freedom struggle in India saw a lot of posters made by Indians to unite the masses to oppose the British Raj. These posters or prints were often considered to be seditious material and were confiscated by the British.

However, these were still distributed and stuck in public places by freedom fighters. They were often written in English and Hindi in order to be relatable to as many people as possible. Posters were an easy way to get certain artists' work to the public as it was low cost and the printing industry had perfected colour lithography and allowed mass production possible. Kanpur (then called Cawnpore) was a hub for printing presses during 1930 - 1946 and many of the freedom struggle and nationalist themed posters were made there.

Shyam Sunder Lal Agrawal was a well-known publisher in Kanpur and was responsible for many nationalist posters during the 1940s. Most of his posters were confiscated and very few posters remain today.

This chromolithograph from the 1940s features heroes and events from the freedom struggle. It was titled 'Jai Hind', which was a slogan used by the Indian National Army as a battle cry and in political speeches against the British Raj.



This poster shows Subhas Chandra Bose surrounded by smaller portraits of members of the Indian National Army like Captain Shah Newaz Khan, Captain Prem Sehgal, Captain Gurubaksh Singh Dhillon, and Captain Lakshi Swaminathan as well as the female fighters of the Jhansi Rani regiment. These individuals were key figures in the Red Fort Trials of 1945-1946 that garnered a lot of attention. The revolts and mutinies by the Indian National Army, the lack of cooperation with the British by the Royal Indian Navy and public resentment played an important role in the withdrawal of the British Raj in India.

The poster of Sardar Vallabhai Patel is another print published by Shyam Sunder Lal Agarwal.

The original work was made by Rup Kishor Kapur; his works were regularly engraved and printed by Shyam Sunder Lal at Kanpur. Patel was the first Deputy Prime Minister of India and was the leader of the Indian National Congress and is considered to be one of the founders of the Republic of India. He contributed to India's struggle for independence and helped integrate its separate parts into one nation.

29.

Jai Hind

Shyam Sunder Lal

10 x 15 in
Cawnpore Print

ESTIMATE
INR 8,000 - 10,000

PROVENANCE
Private Collection

*Published by Shyam Sunder Lal Agrawal, Picture
publisher, Chowk, Cawnpore.*



31.

Jai Hind

Shyam Sunder Lal

14 x 11 in
Cawnpore Print

ESTIMATE
INR 8,000 - 10,000

PROVENANCE
Private Collection

*Printed by National Press, Cawnpore.
Published by Shyam Sunder Lal,
Picture Merchant, Chouk, Cawnpore.*



30.

Sardar Ballabhai Patel

Shyam Sunder Lal

15 x 10 in
Cawnpore Print

ESTIMATE
INR 8,000 - 10,000

PROVENANCE
Private Collection

*Published by Shyam Sunder Lal Agrawal,
Picture publisher, Chowk, Cawnpore.
Edited and printed by The Job Press, Cawnpore.*



32.

Ornamental Art

Nandalal Bose

1940
9.5 x 7 in
Signed and dated "Nandalal Bose 25/1/42"

ESTIMATE
INR 30,000 - 50,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

*Published by Nandalal Bose, Kala Bhavan,
Santiniketan, Bengal..*



33.

Desh: Gandhi issue

Bankim Chandra Sen

1948
11 x 8 in

ESTIMATE
INR 3,000 - 5,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

*Published by Ananda Bazar Patrika Ltd, Calcutta.
Written in Bengali.*



35.

Matribhumi: Gandhi Issue

Sudhindranath Dutta

1948
10 x 7 in

ESTIMATE
INR 3,000 - 5,000

PROVENANCE
Private Collection

*Published by Matribhumi Press, Calcutta.
Dated Febraury 1948. Written in Bengali.*



34.

Desh: Rabindranath Tagore Birth Anniversary Issue

Bankim Chandra Sen

1941
11 x 8 in

ESTIMATE
INR 3,000 - 5,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

*Published by Matribhumi Press, Calcutta. Dated
Febraury 1948. Written in Bengali.*



36.

Matribhumi

Sudhindranath Dutta

1948
10 x 7 in

ESTIMATE
INR 3,000 - 5,000

PROVENANCE
Rathindranath Tagore - Mira Chatterjee Estate

*Published by Matribhumi Press, Calcutta.
Dated July 1948.
Written in Bengali.*



37.

1946 Netaji Subhas Bose Calendar

Shiri Talashilkar

1945
20 x 15 in

ESTIMATE
INR 15,000 – 20,000

PROVENANCE
Private Collection

*Printed by New Jack Printing works Ltd., Bombay.
Published by S. M. Wagle, Bombay.*



“It is through sufferings and sacrifice alone that a cause can flourish and prosper and in every age and clinic, eternal law prevails. The blood of the martyr is the seed of the church. An individual must die so that the nation may live. Today I must die so that India may live and may win freedom and glory”

- Subhas Chandra Bose

38.

Srimati Sarojini Naidu

Shyam Sunder Lal

10 x 15 in
Cawnpore Print

ESTIMATE
INR 8,000 – 10,000

PROVENANCE
Private Collection

*Published by Shyam Sunder Lal Agrawal,
Picture publisher, Chowk, Cawnpore.*



No Reserve Nationalism Book Auction
20-26 January 2020

Auction is open for proxy bidding

Auction commences for live bidding at **10 am**
on 20th January and ends as per schedule on 26th January at **7 pm**

Lot Numbers	Closing Time (India)	Closing Time (US Eastern)	Closing Time (US Pacific)	Closing Time (UK)	Closing Time (Japan)	Closing Time (Hong Kong)
1 - 14	7.00 PM	9.30 AM	6.30 AM	2.30 PM	10.30 PM	9.30 PM
15 - 28	7.30 PM	10.00 AM	7.00 AM	3.00 PM	11.00 PM	10.00 PM
29 - 38	8.00 PM	10.30 AM	7.30 AM	3.30 PM	11.30 PM	10.30 PM

TERMS & CONDITIONS

20% Buyers Premium

All applicable duties and taxes (GST), and shipping and handling charges shall be borne by the winning bidder.
GST applicable on the Buyers Premium shall be payable by the winning bidder.

Please visit the Prinseps website (www.prinseps.com/terms-and-conditions) for further details on the terms and conditions of this auction.

ABSENTEE/PROXY BID FORM

To enter absentee/proxy bids, please sign the completed form and email it to bids@prinseps.com

“I request Prinseps without legal obligation on its part, to bid on the Lots listed below, up to the maximum specific price I have specified. I agree that my bid will be treated as an offer and is subject to the terms and conditions listed on www.prinseps.com. I understand that Prinseps is accepting written bids for the convenience of clients and I will not hold them liable for failure to record my bid. I understand that a Maximum bid once recorded may not be cancelled”. Bidders are requested to provide all invoicing details to Prinseps prior to sale as no invoices will be changed after the sale and the bidder will be invoiced as registered with Prinseps.

20% Buyers Premium

LOT No.	Artist/Description	Maximum Bid Amount (INR)

Name:

Email:

Address:

City:

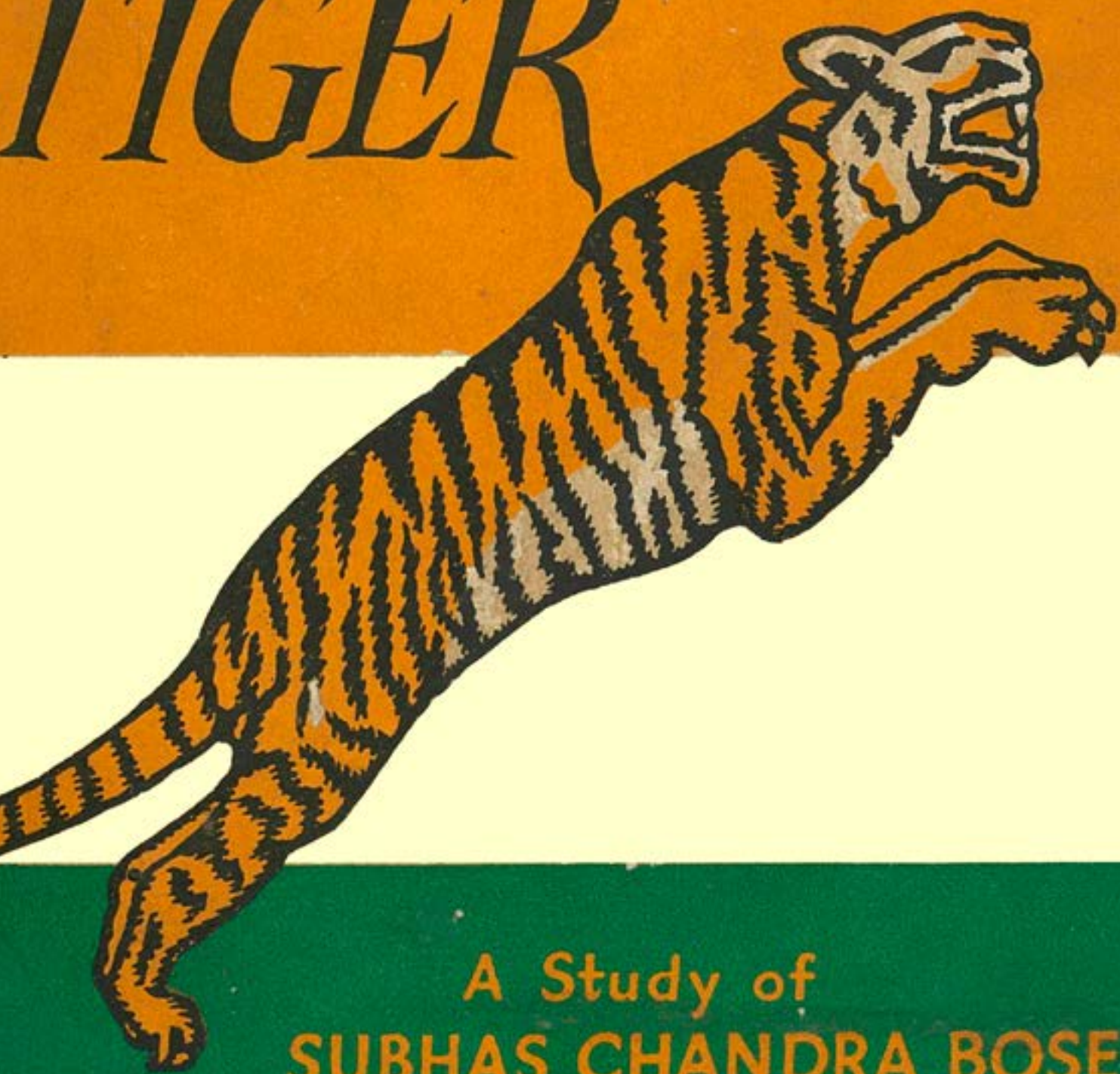
ZIP/Post Code:

Country:

Telephone:

Signature:


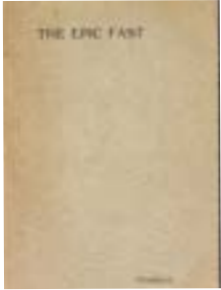
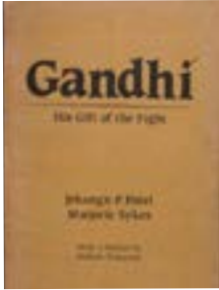

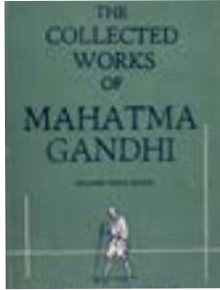





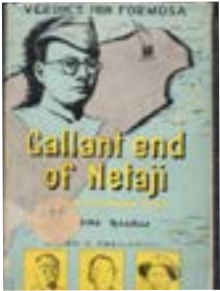


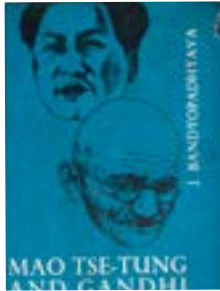








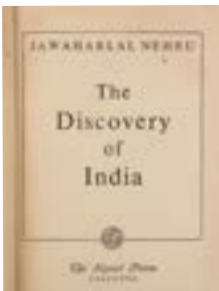







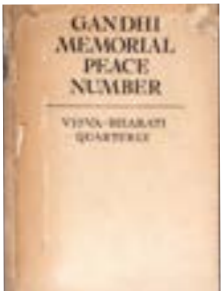







The
**SPRINGING
TIGER**



A Study of
SUBHAS CHANDRA BOSE

INDIAN
**INDEPENDENCE
MOVEMENT**
IN EAST ASIA

K.S.GIANI
with a foreword by
SRIYUT SARAT CHANDRA BOSE

<p>1. Netaji Subhas Chandra Bose Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>5. Pyarelal Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>9. Jehangir P. Patel & Marjorie Sykes Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>13. Amal Home Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>17. Mohandas Karamchand Gandhi Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>21. Amal Home Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>25. Hugh Toye Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>29. Shyam Sunder Lal Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>33. Bankim Chandra Sen Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>37. Shiri Talashilkar Starting Bid : INR 1000</p> 
<p>2. Harin Shah Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>6. Subhas Chandra Bose Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>10. Jawaharlal Nehru Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>14. Jayantanuja Bandyopadhyaya Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>18. Mohandas Karamchand Gandhi Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>22. Visva Bharti University Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>26. K. S. Giani Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>30. Shyam Sunder Lal Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>34. Bankim Chandra Sen Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>38. Shyam Sunder Lal Starting Bid : INR 1000</p> 
<p>3. Pritish Ch. Raychaudhury Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>7. Ricahrd J. Walsh Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>11. Jawaharlal Nehru Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>15. Mohandas Karamchand Gandhi Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>19. Charles Freer Andrews Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>23. Durlab Singh Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>27. Dinanath Gopal Tendulkar Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>31. Shyam Sunder Lal Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>35. Sudhindranath Dutta Starting Bid : INR 1000</p> 	
<p>4. Arun Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>8. Kshitish Roy Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>12. Mukul Dey Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>16. Various Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>20. Jawaharlal Nehru Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>24. K. M. Tamhankar Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>28. Mohandas Karamchand Gandhi Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>32. Nandalal Bose Starting Bid : INR 1000</p> 	<p>36. Sudhindranath Dutta Starting Bid : INR 1000</p> 	

Prinseps Auction House & Gallery
3rd Floor, Birla Centurion, PB Marg,
Worli, Mumbai 400030, India

RESEARCH AND SPECIALISTS FOR THE SALE

Indrajit Chatterjee

+91 98102 13922
indrajit@prinseps.com

Menaka Mahtab

+91 98200 98761
menaka@prinseps.com

Krishna Khiyani

+91 98200 98515
krishna@prinseps.com

Girish Bajaj

girish@prinseps.com

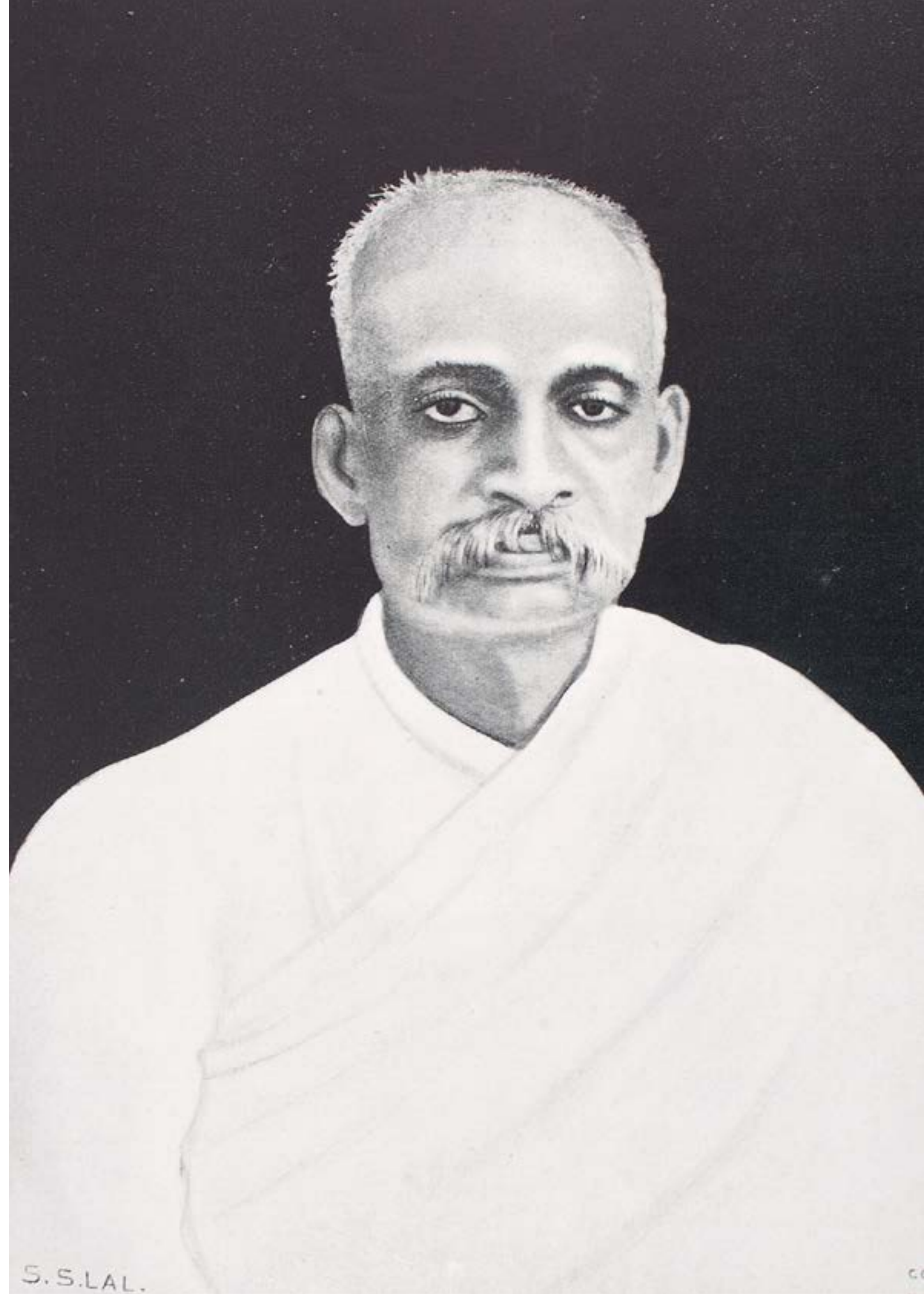
Auction Results:
www.prinseps.com

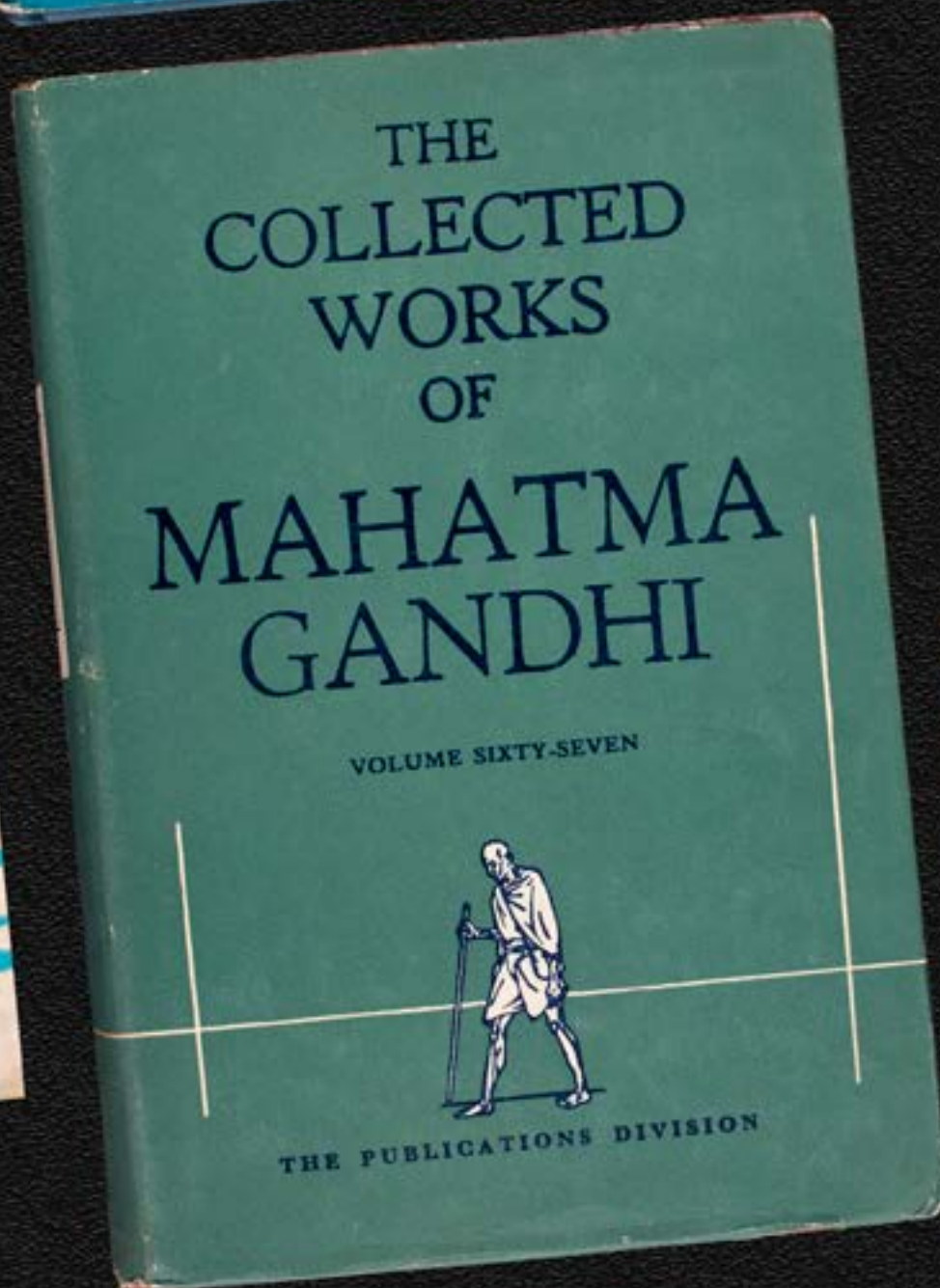
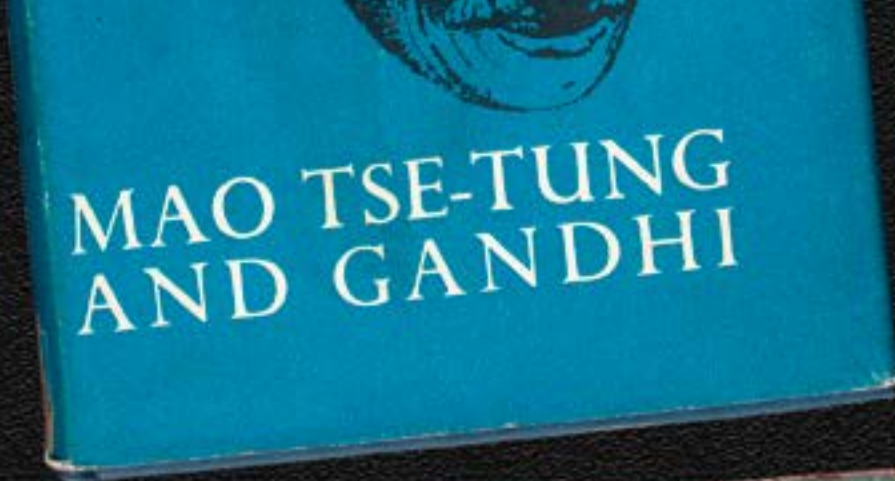
Preview Dates:

9th-12th January 2020
11 am - 8 pm

**Taj Art Gallery, Taj Mahal Palace, Apollo Bunder,
Colaba, Mumbai**

Catalogues are also available at www.prinseps.com
Bids can be placed at www.prinseps.com or via phone bidding.





PRINSEPS

NO RESERVE NATIONALISM BOOK AUCTION

20-26 JANUARY 2020